जांनिसार अख़्तर

और उनकी शायरी

सम्पादक
प्रकाश पण्डित

सम्मति व समालोचना के लिए
प्रकाशक की ओर से सादर भेंट

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
दिसम्बर १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल, दिल्ली

सूची

मेरी ज़िन्दगी तुझी से थी, मेरी शायरी भी तुझी से है
मेरी ज़िन्दगी न संवर सकी, मेरी शायरी को संवार दे

जीवनी

बीयर का एक बड़ा सा घूंट लेते हुए उसने कहा, "प्रकाश! मैं बम्बई से तंग आ चुका हूं। अजीब मशीनी शहर है। दोस्त की दोस्ती पर तो क्या, आदमी दुश्मन की दुश्मनी पर भी भरोसा नहीं कर सकता। तुम नहीं जानते मैं वहां कैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूं!"

अपनी पत्नी 'सफ़िया' (जो प्रसिद्ध प्रगतिशील शायर 'मजाज़' की छोटी बहन और स्वयं एक लेखिका थीं) के अचानक देहान्त और बच्चों की देख-रेख का कोई उचित प्रबंध न हो पाने से उन दिनों वह बहुत परेशान और दुखित था; अतः बीयर का पहला घूंट लेते ही जब बम्बई की चर्चा छिड़ गई, जहां उसे बड़ी कटु आर्थिक परिस्थितियों में से गुज़रना पड़ रहा था, तो वह और भी उदास हो गया।

उसकी उस कष्टदायक उदासी को किंचित कम करने के लिये मैंने गिरह लगाई, "लेकिन खुद तुमने ही तो अच्छी-खासी प्रोफ़ैसरी छोड़कर बम्बई का रुख किया था; और फिर बम्बई में अपने कई साथी हैं। इस्मत चुग़ताई हैं, कृष्णचन्द्र हैं, साहिर लुध्यानवी, सरदार जाफ़री, मजरूह सुल्तानपुरी, राजेन्द्र सिंह बेदी......"

"हां, हां" मेरी इस लम्बी सूची से बौखला कर उसने

कहा, "यह सब तो ठीक हैं, लेकिन इनसे क्या होता है ? हरेक अपने-अपने-चक्कर में फंसा हुआ है और फ़िल्म का चक्कर, तुम जानो आदमी को बिल्कुल 'घन-चक्कर' बना देता है ।"[१] उसने बीयर का एक और लम्बा घूंट लिया और कुछ देर तक चुप रहने के बाद बोला, "यार ! बीयर से बात नहीं बन रही, व्हिस्की चलनी चाहिए ।"

व्हिस्की चलने लगी और दो-तीन पैगों के बाद कुछ सरूर में आकर उसने बम्बई की फ़िल्म-लाइन की जो घटनायें जिस दर्द ,भरे ढंग में सुनाईं वे नशा तो नशा, होश तक उड़ा देने वाली थीं ।

"और तो और" उसने फीकी-सी हंसी हंसते हुए कहा, "फ़िल्म 'अनारकली' का मशहूर गाना 'ऐ जाने-वफ़ा आ' मेरा लिखा हुआ है, लेकिन दूसरी फ़िल्म कम्पनियों के प्रोड्यूसर उसे किसी दूसरे शायर का मानकर मुझसे कहते हैं, अख़्तर साहब ! वैसा गाना लिखिये ।"

बातें तो वह अधिकतर बम्बई और वहाँ के फ़िल्म-जगत के बारे में ही कर रहा था, लेकिन शीघ्र ही मुझे महसूस होने लगा मानो ऐसी बातें वह जान-बूझकर कर रहा है—उस ग़म को भुलाने के लिए जो रह-रह कर उसका दिल मसोस रहा था और जो उसकी प्रिय पत्नी 'सफ़िया' का ग़म था ।

---

१. उस समय तो मैंने इसे 'अख़्तर' का 'शाब्दिक-चक्कर' समझा था, लेकिन अब, जबकि मैं स्वयं फिल्म जगत् में हूँ, 'घन-चक्कर' बनने की वास्तविकता पूर्ण रूप से मुझ पर स्पष्ट हो चुकी है। (प्रकाश पण्डित)

इसी ग़म ने उससे 'खाके-दिल' और 'खामोश आवाज' ऐसी उर्दू की महत्वपूर्ण नज्में कहलवाईं। विशेषत: 'खाके-दिल'! जिसके सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध कहानीकार कृष्णचन्द्र ने उसे लिखा था :—

"इस नज्म पर तुम्हारे ज़ाती (व्यक्तिगत) ग़म की चिलमन तो पड़ी हुई है, लेकिन इस चिलमन के पीछे एक पूरा हिन्दोस्तानी घर आबाद है। मुझे इस नज्म में एक ऐसे समाज की बुनियाद (नींव) नजर आती है जो अभी है नहीं, लेकिन जिसे होना है। इस नज्म में इन्सान और ज़िन्दगी से एक ऐसी भरपूर मोहब्बत पाई जाती है कि मौत अपने कामियाब-तरीन लम्हों में (सफल-तम क्षणों में) जिन्दगी से हिरासाँ (भयभीत) नज़र आती है। और जुदाई के आखिरी कर्बनाक सानियों में (अत्यन्त कष्ट-दायक क्षणों में) भी विसाल (मिलन) का शुबा (सन्देह) होता है। जैसे 'सफ़िया' का हाथ अब भी तुम्हारे हाथ में है। जैसे उसके होंटों की मुस्कराहट अब भी तुम्हारे माथे पर मचल रही है। जैसे उसकी निगाहों की गर्मी अब भी तुम्हारे दिल को मये-शवाना (रात के समय पी गई शराब) से मख़्मूर किये हुए है। जरा सोचो तो नौ साल की बुलंद और मुतवाज़िन (संतुलित) रफ़ाक़त (मैत्री) ने उर्दू को यह नज्म दी है। अगर यह रिश्ता महज़ (केवल) जिस्मानी (शारीरिक) होता, जैसा कि हमारे समाज की बदनसीबी और कोताही (आलस्य या त्रुटि) और जहालत (मूढता) से लाखों घरों में होता है, तो यह नज्म कहां से होती ?"

उपरोक्त घटना १९५३ ई० की है। इसके बाद 'अख़्तर' तीन-चार मास तक भारत के विभिन्न शहरों में आवारागर्दी करता रहा। मानो एक पागलपन था जो उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर लिये फिरता था। उसने और भी बुरी तरह पीनी शुरू कर दी थी और अस्त-व्यस्तता उसके जीवन की विशेषता बन गई थी। कुछ समय बाद जब 'अख़्तर' के नाम 'सफ़िया' के पत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए तो उनके अध्ययन से लोगों के साथ-साथ मुझे भी यह वास्तविकता• विदित हुई कि 'सफ़िया' को न केवल 'अख़्तर' से असीम प्रेम था बल्कि वह उस की संरक्षिका भी थी। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर न केवल उसने 'अख़्तर' का साथ दिया था, बल्कि हर कड़े वक़्त में उसे प्रोत्साहन भी दिया था।

'अख़्तर' विक्टोरिया कालेज ग्वालियार में उर्दू का लेक्चरर था और वहां उसका जीवन कालेज से घर और घर से कालेज तक सीमित था। न कोई साहित्यिक सरगर्मी थी, न कोई मेल-मुलाकाती। 'सफ़िया' ने एक पत्र में उसे लिखा था :

"ग्वालियार में तुम्हारी ज़ात से इतनी कम चीजों को वाबस्ता (सम्बंधित) पाती हू कि समझ में नही आता कि तुम वहां हो कैसे ?"

और फिर जब १९५० मे 'अख़्तर' हमीदिया कालेज भोपाल में उर्दू-फ़ार्सी विभाग का अध्यक्ष था और उसका जीवन बहुत सन्तुलित था, भारत सरकार ने सरकारी लोगों पर यह

पाबंदी लगा दी कि वे प्रगतिशील-लेखक-संघ से किसी प्रकार का कोई नाता नहीं रख सकते। 'अख्तर' के लिए यह कड़ी आज़माइश का वक़्त था। एक ओर रोज़ी-रोज़गार और सामाजिक प्रतिष्ठा थी और दूसरी ओर सिद्धांत और मान्यताएं। इस परीक्षा में जब 'अख्तर' पूरा उतरा तो 'सफ़िया' ने बड़े गौरव से उसे लिखा :

"तुमने इस्तेफ़ा (त्यागपत्र) दे दिया, अच्छा किया। एक तवील जहनी कशमकश (दीर्घ मानसिक संघर्ष) का ख़ातमा यूंही मुमकिन था। मेरी तबीयत की कमज़ोरी समझो या कुछ भी, मेरे लिए यह फ़ैसला करना मुश्किल हो जाता। बहरहाल तुमने अपने अज़्म (संकल्प, साहस) का सुबूत दिया और सच जानो मैं तुम्हारी फ़ौक़ियत (उत्तमता, महानता) के एहसास से सिर झुकाने पर तैयार हूं।"

प्रत्यक्ष है ऐसी प्रिय मित्र और पथप्रदर्शक पत्नी की जुदाई 'अख्तर' के लिए कोई साधारण घटना न थी, जिसे वह चुपचाप सहन कर लेता। इस असह्य ग़म में, जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका हूं, वह बेतहाशा शराब पीने लगा; और उसकी मानसिक स्थिति ऐसे नीम-पागल की-सी हो गई, जिसे अगर कुछ प्रदान कीजिये तो कोई धन्यवाद नहीं और अगर कुछ छीन लीजिये तो कोई निन्दा नहीं। उसके बाल उलझे हुए है, लेकिन वह निश्चित है। घिसते-घिसते चप्पल की एड़ी गायब हो गई है और पायजामे के पाँयचे फट गये है, लेकिन वह निश्चित है। सुबह वह इसलिये कपड़े बदलता है कि शाम को मैले चिकट हो जायें

और नियमबद्ध जीवन व्यतीत करने की उसकी 'आकांक्षा' तो इस स्तर पर पहुंच चुकी है कि अब वह कोई 'नियम' सहन नहीं कर सकता। लेकिन तीन वर्ष बाद १९५६ ई० में एशियन राइटर्स कान्फ्रेंस के अवसर पर दिल्ली में जब मेरी उससे पुनः मुलाकात हुई तो आशा के विरुद्ध वह काफ़ी खुश नजर आया। काले रंग की बढ़िया शेरवानी उसके बदन पर थी और उसके साथ एक दुबली-पतली सुन्दर-सी लड़की थी, जिससे मेरा परिचय कराते हुए उसने कहा "ये हैं खदीजा तलअ़त—मेरी बीबी।" और इसके साथ ही जब उसने मुझे बताया कि यह विवाह प्रेम-विवाह था तो नमस्ते कहते हुए मुझे 'सरदार जाफ़री' का शेर याद आ गया :—

सब्र कर लेंगे तेरी याद में रोने वाले।
झिलमिला जाते हैं इन्सान की यादों के चिराग ॥

लेकिन यादों के चिराग झिलमिला जरूर जाते हैं, बुझते शायद जीवन भर नहीं। क्योंकि १९५८ ई० में भोपाल के एक साहित्यिक समारोह में, जिसमें उसकी दूसरी पत्नी 'खदीजा' भी उपस्थित थीं, उसने बड़े पीड़ा भरे स्वर में अपनी नज़्म 'खाके-दिल'[1] सुनाई। और बैठक के बाद 'खदीजा' का मलिन मुख देखकर उसने कहा "खदीजा! सफ़िया से मेरी मोहब्बत बट जरूर गई है, लेकिन खत्म नहीं हो सकती। किसी अगले मुशायरे में मैं ऐसी नज़्म पढ़ूँगा जिसे सुनकर तुम खुश हो जाओगी।" और सचमुच दूसरे दिन की बैठक में ही उसने 'खदीजा के नाम'[2] शीर्षक से ऐसी नज़्म पढ़ी जिसे सुनते हुए

१-२. ये दोनों नज़्में इस संकलन में शामिल हैं।

'ख़दीजा' शर्मा-शर्मा गई। और यहाँ बम्बई में आजकल मैं देखता हूं 'ख़दीजा' ही के कारण उसका जीवन काफ़ी हद तक ढर्रे पर आ गया है। उसने नियमपूर्वक फिल्मी गीत लिखने का काम शुरू कर दिया है और शीघ्र ही एक बहुत अच्छे फ़्लैट में मुन्तकिल होने वाला है। स्वयं 'अख़्तर' का कहना है कि उसे अपने प्रारंभिक प्रेम में 'अंजुम' से जो असफलता हुई थी 'ख़दीजा' के प्रेम से उसकी क्षतिपूर्ति हो गई है।

जांनिसार 'अख़्तर' की पितृ-भूमि तो ख़ैराबाद, जिला सीतापुर (अवध) है लेकिन जन्म उसका ८ फ़रवरी १९१४ ई० को ग्वालियार में हुआ। प्रारंभ ही से उसका घराना उच्चकोटि का साहित्यिक घराना रहा है। मौलवी फ़ज़ल हक़ ख़ैराबादी जैसे महा-पण्डित विद्यावान जिनसे 'ग़ालिब' ने अपने दीवान (कविता-संग्रह) का चयन कराया और जिन्हें १८५७ ई० की क्रान्ति में अंग्रेजों के विरुद्ध जिहाद (धर्म-युद्ध) का फ़तवा (धर्माज्ञा) देने पर काले-पानी की सजा दी गई थी और मौलाना अब्दुल हक़ ख़ैराबादी जो तर्क-शास्त्र के प्रकांड पंडित थे इसी घराने से उठे थे। स्वयं 'अख़्तर' के पिता 'मुज़्तर' ख़ैराबादी उर्दू के विख्यात शायरों में से थे। यूं शायरी 'अख़्तर' को विरासत के रूप में मिली और दस-ग्यारह वर्ष की आयु में ही उसने तुकें भिड़ाना शुरू कर दीं। फिर ग्वालियार से मैट्रिक करने के बाद उच्च शिक्षा के लिये जब वह अलीगढ़ विश्वविद्यालय में दाखिल हुआ तो साहित्य-सम्बन्धी अपनी योग्यता के कारण प्रथम वर्ष ही इन्टरमीडियेट कालेज मैगज़ीन

(उर्दू) का सम्पादक चुन लिया गया। अलीगढ़ आने से पूर्व 'अख़्तर' केवल ग़ज़लें कहा करता था, अलीगढ़ की शिक्षा और वातावरण ने उसका ध्यान नज़्म की ओर मोड़ा और अभी वह बी० ए० ही का विद्यार्थी था कि उसकी ख्याति अलीगढ़ से निकलकर पूरे भारत मे फैलने लगी। उसकी पहली नज़्म, जिसने उसे ख्याति की सीढ़ी पर ला खड़ा किया, 'गर्ल्ज़ कालेज की लारी' थी। यह एक वर्णनात्मक (Narrative) नज़्म थी और जाँनिसार 'अख़्तर' के कथनानुसार "जवानी की एक शरारत के सिवा कुछ न थी"। फिर भी यह नज़्म शैली, प्रेक्षण और अपनी रोमांटिक कैफ़ियत के कारण पढ़ने वालों के लिये बड़ी आकर्षक सिद्ध हुई।

इस नज़्म के सम्बंध मे एक दिलचस्प घटना भी घटी। १६३५ ई० में इस नज़्म के प्रकाशन के कुछ दिन बाद अलीगढ विश्वविद्यालय के मॉरिस हॉल में एक मुशायरा था। 'अख़्तर' को जब स्टेज पर बुलाया गया तो हॉल में 'गर्ल्ज़ कालेज की लारी' सुनाने की फ़र्माइश गूँज उठी। हॉल की गैलरी चूँकि स्कूल और कालेज की लड़कियों से भरी हुई थी इसलिये 'अख़्तर' यह नज़्म सुनाने से कतराता रहा*। लेकिन

---

*'अख़्तर' ने मुझे भी यह नज़्म इस संकलन मे शामिल करने से रोक दिया था। फिर भी दिलचस्पी के लिये सत्तर-अस्सी शेरों की इस नज़्म के कुछ बन्द यहा प्रस्तुत कर रहा हूं :—

फ़ज़ाओ में है सुबह का रंग तारी
गई है अभी गर्ल्ज़ कालेज की लारी

जब सभापति ने भी आग्रह किया तो कोई चारा न पाकर 'अख़्तर' को नज़म शुरू करना पड़ी। चार-छः शेर ही पढ़े होंगे

गई है अभी गूंजती गुनगुनाती
ज़माने की रफ़्तार का राग गाती
वो सड़कों पे फूलों की धारी-सी बुनती
इधर से उधर से हसीनों को चुनती
झलकते वो शीशों में शादाब चेहरे
वो कलियां-सी खिलती हुई मुंह-अंधेरे
वो माथों पे साड़ी के रंगीं किनारे
सहर से[1] निकलती शफ़क़ के[2] इशारे
किसी की नज़र से अयां[3] खुशमज़ाकी
किसी की निगाहों में कुछ नींद बाक़ी

... ...

ये खिड़की से रंगीन चेहरा मिलाये
वो खिड़की का रंगीन शीशा गिराये
ये खिड़की से एक हाथ बाहर निकाले
वो ज़ानू पे[4] गिरती किताबें संभाले
ये चलती ज़मीं पर निगाहें जमाती
वो होंटों में अपने क़लम को दबाती
किसी की वो हर बार त्योरी-सी चढ़ती
दुकानों के तख़्ते अधूरे से पढ़ती
कोई इक तरफ़ को सिमटती हुई-सी
किनारे को साड़ी के बटती हुई-सी
वो लारी में गूंजे हुए ज़मज़मे से[5]
दबी मुस्कराहट सुबक[6] क़हक़हे से

१. सुबह से २. ऊषा के ३. प्रकट ४. घुटनों पर ५. गीत से ६. हल्के

कि गैलरी से लड़कियों की सुपरवाइज़र ने सभापति के पास पर्चा भेजा कि 'अख़्तर' यदि यह नज़्म न पढ़े तो उचित होगा। 'अख़्तर' ने तो नज़्म अधूरी छोड़ दी लेकिन हॉल में एक ऊधम मच गया। हर कोई यह नज़्म सुनना चाहता था। नौबत यहां तक पहुँची की मुशायरा ही बन्द करना पड़ा।

इस घटना के चार-छः दिन बाद जब 'अलीगढ़ मैगज़ीन' प्रकाशित हुआ और उसमें 'अख़्तर' की एक नज़्म 'अब भी मेरे होंटों पे हैं बे-गाये हुए गीत' छपी तो लोगों ने समझा कि 'अख़्तर' ने उस नज़्म के रोके जाने की प्रतिक्रिया के रूप में यह नज़्म कही है। अतःएव उसकी एक पंक्ति 'कमबख़्त ने गाने न दिया एक भी गाना' गर्ल्ज़ कालेज में इतनी मक़बूल हुई कि स्थायी रूप से लड़कियों की उस सुपरवाइज़र का सक्षिप्त नाम (Nickname) 'कमबख़्त' पड़ गया।

अलीगढ़ से जांनिसार 'अख़्तर' ने १६३६ में फ़र्स्ट डिवीज़न मे एम० ए० किया। अपने शिक्षा-काल में वह कई संस्थाओं का मंत्री रहा और 'अलीगढ़ मैगजीन' का सम्पादक भी। १६४० मे विक्टोरिया कालेज ग्वालियार के प्रस्ताव पर वह लैक्चरर

वो लहजों में चांदी खनकती हुई-सी
वो नज़रों में कलियां चटकती हुई-सी
वो आपस की छेड़ें वो झूठे फ़साने
कोई इनकी बातों को कैसे न माने
फ़साना भी उनका तराना भी उनका
जवानी भी उनकी ज़माना भी उनका।

की हैसियत से ग्वालियार चला गया, जहाँ वह १९४७ ई० तक रहा। ग्वालियार में 'अख़्तर' के कथनानुसार उसे अलीगढ़ ऐसा साहित्यिक वातावरण न मिल सका। ले-देकर हिन्दी के प्रसिद्ध कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' थे (जो स्वयं उसी कालेज में लेक्चरर थे) जिनसे दो बातें हो जाती थीं ; अन्यथा घर था और 'अख़्तर' था, या कालेज था और 'अख़्तर' था।

लेकिन १९४७ ई० में जब 'अख़्तर' हमीदिया कालेज भोपाल में उर्दू-फ़ारसी विभग का अध्यक्ष हुआ तो एक बार फिर उसे उसका मन-पंसद वातावरण मिल गया। भोपाल में उसने प्रगतिशील-लेखक-संघ में नए प्राण फूँकने में विशेष योग दिया और वहाँ के नौजवान शायरों और लेखकों पर बड़ा स्वस्थ प्रभाव डाला। १९४८-४९ में वह स्वयं भी प्रगतिशील-लेखक-संघ का अध्यक्ष रहा; लेकिन १९५० में अपनी इन्हीं 'सेवाओं' के कारण भोपाल छोड़कर जीविका अर्जन के लिये उसे बम्बई आना पड़ा, क्योंकि भारत सरकार ने सरकारी कर्मचारियों पर पाबंदी लगा दी थी कि वे प्रगतिशील-लेखक-संघ, इन्डियन-पीपुल्स-थियेटर आदि साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से न तो सम्बंधित रह सकते हैं, न उनके किसी प्रोग्राम में किसी तरह का भाग ले सकते हैं।

बम्बई में पांव जमाने के लिये 'अख़्तर' पूरे तीन वर्ष तक हाथ-पैर मारता रहा, लेकिन कुछ परिणाम न निकला। फ़िल्मी गीत लिखने का थोड़ा-बहुत काम ज़रूर मिला, लेकिन आटे में नमक के बराबर। तीन साल का यह ज़माना 'अख़्तर'

पर बड़ी विपत्तियों का जमाना रहा है। एक ओर आर्थिक चितायें थी, दूसरी ओर पत्नी 'सफ़िया' की बीमारी ने उसे बेहाल कर रखा था। आखिर जनवरी १९५३ ई० में 'सफ़िया' का देहांत हो गया, जिसने 'अख़्तर' का मन-मस्तिष्क झकझोर कर रख दिया। लखनऊ से पत्नी की बीमारी का जब उसे अन्तिम तार मिला तो उसके पास किराये तक के पैसे न थे। पूरे चौबीस घंटे की दौड़-धूप के बाद वह किसी प्रकार किराये का प्रबंध कर सका। लेकिन जब लखनऊ पहुँचा तो 'सफ़िया' की बजाय 'सफ़िया' की क़ब्र देखने को मिली।

'अख़्तर' की शायरी का प्रारंभ उर्दू के अधिकतर शायरों की तरह ग़जल से हुआ। और १९३५ ई० तक उसने परम्परागत् आशिक़ाना ग़जलें ही कहीं। फिर समकालीन शायरों की देखा-देखी उसने रोमान्टिक नज्मे कहनी शुरू की। उन्हीं दिनों अर्थात् १९३६ ई० में जब भारत में प्रगतिशील-लेखक-संघ की नींव पड़ी तो बहुत से अन्य शायरों और लेखकों की तरह वह भी इस साहित्यिक आंदोलन का समर्थक बन गया। अतएव उर्दू के प्रसिद्ध समालोचक एहतिशाम हुसैन के शब्दों में "अब 'अख़्तर' की प्रेम की रोमांटिक उद्भावना मे धीरे-धीरे रोमांटिक क्रांतिवाद का सम्मिश्रण होता गया। और जब सामाजिक यथार्थवाद ने शायर के मन-मस्तिष्क में स्थान बना लिया तो उसकी दृष्टि एक यथार्थवादी की तरह जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ने लगी, और जीवन और क्रांति की उद्भावना भी उसके लिये उसी प्रकार प्रिय बन गई जिस प्रकार 'अंजुम' की रोमांटिक उद्भावना।

उस काल की 'अख़्तर' की क्रांतिवादी शायरी में अंग्रेज़ साम्राज्य के विरुद्ध घोर घृणा और अपने देश की स्वाधीनता के प्रति गहरा प्रेम-भाव भरा हुआ है। उसकी शायरी ने हर क़दम और हर मोड़ पर स्वाधीनता-संग्राम का साथ दिया है। दूसरा महायुद्ध, भारतीय नेताओं के मतभेद, जनसाधारण की दुर्दशा, आर्थिक संकट, बंगाल का अकाल, मित्र-राष्ट्रों की विजय राजनीतिक स्वाधीनता, देश-विभाजन, साम्प्रदायिक उपद्रव, अमरीकी और अंग्रेज़ी साम्राज्य के नेतृत्व में तीसरे महायुद्ध की तैयारी तथा रूस के नेतृत्व में विश्व-शांति के लिए क्रियात्मक आंदोलन, चीन की क्रांति इत्यादि समस्त राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रतिविम्ब उसकी शायरी में विद्यमान है। वह कभी भविष्य के प्रति निराश नहीं हुआ। उसकी शायरी इस भावना से संचारित हुई है कि आज का जीवन-संघर्ष चूंकि आने वाले कल के निर्माण का सूचक है, इसलिए जीवन-संघर्ष को तीव्रता से घबराना नहीं चाहिए। आज उसकी शायरी में सामाजिक वास्तविकताओं का गहरा बोध है और अब उसका विषय-वस्तु वह मानव है जो समाज और प्रकृति पर विजय प्राप्त कर सुन्दर, सरस और सन्तुलित जीवन के निर्माण के लिए संघर्षशील है।

राजनीतिक बोध की तरह जांनिसार 'अख़्तर' का कलात्मक बोध भी बहुत परिपक्व है। इस सम्बंध में उससे बहुत कम चूकें हुई हैं। इसका कारण एक तो काव्य-सम्बंधी उसका उत्तराधिकार है और दूसरे उसने प्राचीन एवं अर्वाचीन साहित्य का

गहरा अध्ययन किया है। अतः कला के रचना-कौशल को पूरा महत्व देते हुए भी वह विषय की ऊष्णता को कम नहीं होने देता। रूप-विधान के नए प्रयोगों में भी उसने अपने रचना-कौशल का अच्छा परिचय दिया है।

अपने अधिकतर समकालीन शायरों की तरह 'अख़्तर' की प्रारंभिक शायरी पर भी 'जोश' मलीहाबादी का काफ़ी असर था; लेकिन धीरे-धीरे उसने स्वयं को इससे मुक्त कर लिया और रंग तथा रस के सुन्दर समन्वय से नये-नये रेखा-चित्र बनाये। 'जोश' के बाद के शायरों की पीढ़ी में उसका नाम 'मजाज़', 'फ़ैज़', 'जज़्बी', 'सरदार जाफ़री', 'मख़्दूम' आदि के साथ लिया जाता है। और संभवतः उसकी रचनाओं का भंडार अपने इन समकालीन शायरों में सबसे अधिक है।

चयन

याद है अब तक

सब कुछ मुझे ऐ जाने-वफ़ा[1] याद है अब तक,
क्या-क्या मै बताऊं मुझे क्या याद है अब तक ?

उड़ती हुई वो ग़ाज़ा-ए-रुख्सार की[2] खुशबू,
हाथों की तेरे बू-ए-हिना[3] याद है अब तक।

बिखरे हुए, बिफरे हुए, मचले हुए गेसू[4] ,
वो ता-ब-कमर[5] जुल्फ़े-रसा[6] याद है अब तक।

वो तेरी निगाहों में मोहब्बत का बुलावा,
पलकों के झपकने की अदा याद है अब तक।

इकरार निगाहों से किया तूने वफ़ा का,
जो कुछ मेरी आंखों ने सुना याद है अब तक।

मै और जवानी के तक़ाज़ों की कहानी,
तू, और जवानी से ख़फ़ा याद है अब तक।

शोखी से मेरे हाथ वो जुल्फ़ों से जकड़ना,
वो जुर्मे-मोहब्बत की सजा याद है अब तक।

मैं चांद तो देखूं मै कोई फूल तो चूमूं,
क्या क़हर[7] था वो रश्क[8] तेरा याद है अब तक।

---

१. वफ़ा (प्रेम) का जीवन (प्रेयसी) २. कपोलों पर लगा पाउडर
३. महंदी की सुगंधि ४. केश ५.कमर तक ६. पहुँचने वाले (लम्बे) केश
७. कयामत ८. ईर्ष्या

जिसका मेरे होंटों पे कोई नाम नहीं है,
इक ऐसी भी कमबख़्त अदा याद है मुझको।

वो तुझसे मुलाक़ात की पहली शबे-रंगी[१],
घुलती हुई आंखों में हया[२] याद है अब तक।

शाने पे[३] मेरे वो तेरे भीगे हुए गेसू[४],
जुल्फ़ों की खुनक[५] मौजे-हवा[६] याद है अब तक।

पहलू में मेरे वो तेरे नग़मों की बुलंदी,
छूती हुई तारों की सदा[७] याद है अब तक।

क़ब्ज़े में फ़जायें[८] थीं तो मुट्ठी में हवायें,
थे ज़ेरे-नगीं[९] अर्जो-समा[१०] याद है मुझको।

सब कुछ मुझे ऐ जाने-वफ़ा याद है अब तक,
क्या-क्या मै बताऊँ मुझे क्या याद है अब तक!

---

१. रंगीन रात २. लज्जा ३. कंधे पर ४. केश ५. शीतल
६. हवा की लहर ७. आवाज़ ८. वातावरण ९. हुक्म के मातहत
१०. धरती, आकाश

पिछली प्रीत

हवा जब मुंह-अंधेरे प्रीत की बंसी बजाती है,
कोई राधा किसी पनघट के ऊपर गुनगुनाती है,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

उफ़क़ पर[1] आस्मां झुककर ज़मीं को प्यार करता है,
ये मन्ज़र[2] एक सोई याद को बेदार करता है[3] ,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

मिलाकर मुंह से मुंह साहिल से[4] जब मौजें गुज़रती हैं,
मेरे सीने में मुद्दत की दबी चोटें उभरती हैं,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

चमकता एक तारा चांद के पहलू में चलता है,
मेरा सोया हुआ दिल एक करवट सी बदलता है,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

ज़मीं जब डूबते सूरज की ख़ातिर आह भरती है,
किरन जब आस्मां को इक विदाई प्यार करती है,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

पिघलती शम्मअ़ पर गिरते हैं जब ताक़ों में परवाने,
सुनाता है कोई जब दूसरों के दिल के अफ़साने,
मुझे इक बार फिर अपनी मोहब्बत याद आती है !

◇ ◇ ◇

---

१. क्षितिज पर २. दृश्य ३. जगाता है ४. तट से

अज़्म[1]

जब मेरे अश्क[2] तेरे हार के क़ाबिल ही नहीं,
जब मेरा प्यार तेरे प्यार के क़ाबिल ही नहीं,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

अब खलिश[3] बन के न झलकूंगा निगाहों से तेरी,
अपना हर नक़्श[4] मिटा जाऊंगा राहों से तेरी,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

मुझको अब यां[5] मेरा एहसास न जीने देगा,
ज़हरे-मय[6] भी न मुझे चैन से पीने देगा,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

कशमकश दिल की कहां रोक सकेगी मुझको,
कौन-सी चीज़ यहां रोक सकेगी मुझको,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

मैं चला जाऊंगा तेरी निगहे-क़हर से[7] दूर,
तेरी महफ़िल से, तेरे दर से[8], तेरे शहर से दूर,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

---

१. संकल्प २. आंसू ३. चुभन ४. चिन्ह ५. यहां ६. शराब-रूपी विष ७. क्रोध-भरी नज़र से ८. दरवाज़े से

दूर इतना मेरी आहें भी न पहुँचें तुझ तक,
हाँ, तसव्वुर की[1] निगाहें भी न पहुँचें तुझ तक,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

दूर इतना कि जिसे सोच के जी घबराये,
लौट आना भी जो चाहूँ तो न लौटा जाये,
मै बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

कम से कम ये तो मिलेगा मुझे आराम वहां,
मेरे आगे कोई लेगा न तेरा नाम वहाँ,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

लौटकर अब तेरी महफ़िल में न आऊँगा कभी,
याद बनकर भी तेरे दिल में न आऊँगा कभी,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊँगा !

रूह में[2] तैर चुके यास के[3] नश्तर[4] अब तो,
मेरा दिल भी, मेरी आँखें भी हैं पत्थर अब तो,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊंगा !

जिन्दगी होगी मोहब्बत की कहानी तेरी,
मुस्करायेगी दुल्हन बनके जवानी तेरी,
मैं बहुत दूर, बहुत दूर चला जाऊँगा !

○ ○ ○

---

१. कल्पना की २. आत्मा में ३. निराशा के ४. शल्य

मुराजअ़त[1]

तेरी महफ़िल की बहारों को नहीं छेड़ूँगा,
अपने टूटे हुए तारों को नही छेड़ूँगा,
अपनी महफ़िल में फिर इक बार चला आने दे !

इक कली भी मेरी नज़रों से नहीं हांपेगी,
मेरी आहों से तेरी शम्मअ़ नहीं कांपेगी,
अपनी महफ़िल में फिर इक बार चला आने दे !

कोई आँसू मेरी पलकों से नहीं टूटेगा,
तेरे फूलों का हसीं रंग नहीं छूटेगा,
अपनी महफ़िल में फिर इक बार चला आने दे !

बेइरादा भी परेशान करूं तो कहना,
चाक[2] अब अपना गिरेबान करूं तो कहना,
अपनी महफिल में फिर इक बार चला आने दे !

---

१. प्रत्यागमन या वापसी २. फाड़ना

बेसुकूं[1] रहके भी आराम, न मानूंगा कभी,
अब ब-इसरार[2] कोई जाम न मांगूंगा कभी,
अपनी महफ़िल में फिर इक बार चला आने दे !

जो गुज़र जाये, शिकायत न करूँगा तुझ से,
तू कहेगी तो मोहब्बत न करूँगा तुझसे,
अपनी महफ़िल में फिर इक बार चला आने दे !

(१६४६)

◇ ◇ ◇

१. अशांत २. आग्रह के साथ

तसव्वुर[१]

आज भी उनकी मोहब्बत का तसव्वुर है वही,
आज भी कोई मुझे दादे-वफ़ा देता है।
दम-सा घुटता है अगर ग़म की सियाह रातों में,
शम्मअ़ की लौ कोई चुपके से बढ़ा देता है।
अब भी जब साज़ उठाता है मेरा दस्ते-जुनूं[२],
कोई टूटे हुए तारों को मिला देता है।
अब भी हमदर्द निगाहों को तरसता है जो दिल,
कोई नज़रें मेरे क़दमों पे झुका देता है।
अब भी जिस वक़्त छलक उठती हैं आंखें मेरी,
अपना आंचल कोई चुपके से बढ़ा देता है।
अब भी जब आह सी उठती है मेरे सीने में,
मेरे होंटों से कोई होंट मिला देता है।
अब भी उठती है मेरी सिम्त[३] वो नज़रें इस तौर[४],
जैसे सब कुछ कोई, ख़ुश होके लुटा देता है।
मैं तो अब अ़हदे-वफ़ा[५] और से कर लूं लेकिन,
कोई धीरे से मेरा हाथ दबा देता है।
हाय ये गर्म दिलावेज़ तसव्वुर उनका,
कोई फिर दिल में मेरे आग लगा देता है।
और पीता हूं तो पीने नहीं देता कोई।
अब किसी तरह भी जीने नहीं देता कोई॥
(१९३८)

---

१. कल्पना २. उन्माद का हाथ ३. ओर ४. तरह ५. प्रेम-प्रतिज्ञा

तल्ख़-नवाई[1]

क्या हुआ तूने जो पैमाने-वफ़ा[2] तोड़ दिया !
मैंने ख़ुद भी तो किसी फूल से नाज़ुक दिल को
वक़्त की रेत पे तपता हुआ छोड़ा था कभी
अपना पैमाने-वफ़ा जान के तोड़ा था कभी
क्या हुआ तूने जो पैमाने-वफ़ा तोड़ दिया !

क्या हुआ तुझको अगर मुझसे मोहब्बत न रही !
ज़िन्दगी आप तग़य्युर[3] का फ़साना[4] जब हो
दिल के जज़्बात भी हर आन[5] बदल सकते हैं
अश्क ख़ुद बर्फ़ के सांचे में भी ढल सकते हैं
क्या हुआ तुझको अगर मुझ से मोहब्बत न रही !

क्या हुआ फेर लीं तूने जो निगाहें मुझसे !
आबगीनों के[6] हसीं क़ल्ब से[7] कितनी किरनें
बे किसी अक्स के[8] ख़ामोश गुज़र जाती हैं
कितनी मौजें है जो बन बन के बिखर जाती हैं
क्या हुआ फेर लीं तूने जो निगाहें मुझसे !

क्या हुआ तोड़ दिया तूने अगर साज़ मेरा !
छीन सकता नहीं मुझसे मेरे नग़मे कोई
साज़ का क्या है कि बिन साज़ भी गा सकता हूं
आज भी एक हसीं आग लगा सकता हूं
क्या हुआ तोड़ दिया तूने अगर साज़ मेरा !

(१६४२)

---

१. कटु शब्द २. प्रेम-प्रतिज्ञा ३. परिवर्तन ४. कहानी ५. प्रतिक्षण
६. पानी के बुलबुलों के ७. हृदय से ८. किसी प्रतिबिम्ब के बिना

बेज़ारी

रात और ये चांद तारों के निशां,
तीरगी[1] और टिमटिमाता आस्मां,
उठ रहा है दिल से रह-रहकर धुआं,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

मौत का मज़बूत लेकिन सर्द हात[2],
छू रहा है देख नब्ज़े-कायनात[3]
आह मत दोहरा गुज़श्ता वाक़यात[4]
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

दिल तो दिल, हस्ती मिटा बैठा हूं मैं,
घर तो घर, दुनिया लुटा बैठा हूं मैं,
अब तो उनको भी भुला बैठा हूं मैं,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

सब्र, सेहत, अक़्ल, सब कुछ खो चुका,
छोड़ अब जो हो चुका सो हो चुका,
जिस क़दर रोना था मुझ को रो चुका,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

---

१. अंधकार २. हाथ ३. सृष्टि की नब्ज़ (हाथ की नाड़ी)
४. बीती घटनायें

मुद्दतों झूठी मसर्रत के लिये,
मैंने दिल को सैंकड़ों धोके दिये,
जी ठहर सकता नहीं अब बे-पिये,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

देख तारों की नज़र पथरा गई,
रात की चोटी कमर तक आ गई,
रूह पिछली याद से घबरा गई,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

ये सितारे, ये कफ़न के सर्द फूल,
आस्मां जैसे जली लाशों की धूल,
चांद गोया एक बेउम्मत रसूल[१]
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

सल्तनत[२] इक ज़ुल्म, मज़हब इक बला,
मुफ़लिसी[३] इक जुर्म, मेहनत इक सज़ा,
आप क्या क़ह्हार से[४] कम है ख़ुदा,
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

---

१. ऐसा ईश्वरीय दूत जिसका कोई अनुयायी समुदाय न हो
२. साम्राज्य ३. निर्धनता ४. अत्यन्त अत्याचारी

ये जमीनो-आस्मां, ये सुबहो-शाम,
ये क़फ़स[1] ये क़ैद ये जिंदां[2] ये दाम[3],
है गिरां[4] ये हल्क़ा-ए-वक़्तो-मुक़ाम[5],
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे !

चांद का चेहरा है बेहद मुज़महिल[6],
सुबह होती है बुझा जाता है दिल,
ला पिला इक और जामे-मुश्तइल[7]
दोस्त ! सब कुछ भूल जाने दे मुझे ।

(१६३८)

◇ ◇ ◇

---

१. पिंजरा २. क़ैदख़ाना ३. जाल ४. भारी ५. समय और स्थान की जंजीर ६. शिथिल ६. भड़काने वाली शराब का प्याला

बेख़्वाब आंखें

कितनी रातों से तुझे नींद नहीं आई है !

ये तेरी सर्द जबीं[1] , ये तेरी बेख़्वाब आंख,
छांव में चांद सितारों की ये पुर-आब[2] आंखें।
खोई खोई सी ये मायूस निगाहें तेरी,
ये तेरी सांस में टूटी हुई आहें तेरी।
उलझे उलझे से तेरी तरह ये गेसू तेरे,
ये थका जिस्म, ये बेजान से बाज़ू तेरे।
करवटों में ये गुज़रती हुई रातें तेरी,
ज़ेरे - लब[3] दिल से ये दुखती हुई बातें तेरी।
उफ़ ये नाकाम मोहब्बत की कहानी तेरी,
हाए आग़ोश से महरूम[4] जवानी तेरी।
तू है बेताब तो ये अर्ज़ो-समा[5] हैं बेताब,
तू है बेख़्वाब तो आलम की[6] फ़ज़ा[7] है बेख़्वाब।

तू जो सो जाये तो तारों को भी नींद आ जाये !

० ० ०

---

१. माथा २. सजल ३. होंटो-होंटों में ४. वंचित ५. धरती, आकाश ६. संसार की ७. वातावरण

भूला फ़साना

कोई जब साज़ छेड़ेगा कोई जब गीत गायेगा,
यकायक तार कोई थरथरा कर टूट जायेगा,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फ़साना याद आयेगा !

कभी हंगामे-ज़ीनत[१] कुछ कहेगा तुमसे आईना,
नज़र आने लगेगा दफ़अ्तन[२] जब अक्स[३] धुंदला सा,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फ़साना याद आयेगा !

बहारों की हसी निखरी हुई सरशार[४] रातों में,
मोहब्बत पर कभी जब बहस आ जायेगी बातों में,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फ़साना याद आयेगा !

अगर थक कर किसी नावल का कोना मोड़ती होगी,
अगर शग़लन[५] किसी के ख़त के पुर्ज़े जोड़ती होगी,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फ़साना याद आयेगा !

अगर बेकैफ़ लम्हे[६] अंखड़ियों की नींद लूटेंगे,
फ़ज़ा में[७] दफ़अ्तन जब दो सितारे साथ टूटेंगे,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फसाना याद आयेगा !

कभी गर कोई मुबहम[८] ख़्वाब पिछले से जगा देगा,
सहर के[९] दोश पर[१०] जब चांद अपना सिर झुका देगा,
तुम्हें उस वक्त इक भूला फ़साना याद आयेगा !

० ० ०

---

१. शृंगार करते समय २. एकाएक ३. प्रतिछाया ४. उन्मत्त
५. मनोविनोद के तौर पर ६. फीके क्षण ७. वातावरण में ८. अस्पष्ट
९. सुबह के १०. कंधे पर

तजज़िया[1]

मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन !

फिर भी जब पास तू नहीं होती
खुद को कितना उदास पाता हूं
गुम से अपने हवास पाता हूं
जाने क्या धुन समाई रहती है
इक खमोशी सी छाई रहती है
दिल से भी गुफ़्तगू नहीं होती
मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन !

मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन !

फिर भी शब की[2] तवील खलवत में[3]
तेरे औक़ात[4] सोचता हूं मैं
तेरी हर बात सोचता हूं मैं
कौन से फूल तुझको भाते हैं
रंग क्या क्या पसंद आते हैं
खो सा जाता हूं तेरी जन्नत में
मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन !

---

१. विश्लेषण २. रात की ३. दीर्घ एकांत में ४. समय (किस समय तुम क्या करती हो)

में तुझे चाहता नहीं लेकिन !

फिर भी एहसास से[1] नजात[2] नहीं
सोचता हूं तो रंज होता है
दिल को जैसे कोई डवोता है
जिसको इतना सराहता हूं मैं
जिसको इस दर्जा चाहता हूं मैं
उसमें तेरी सी कोई बात नहीं

मैं तुझे चाहता नहीं लेकिन !

(१९४३)

◇ ◇ ◇

एक लम्हा

मुद्दत में किसी की आंखों से इक लम्हे को आंखें चार हुईं,
कुछ सांस किसी की रुक सी गई, कुछ रूह मेरी थर्रा सी गई।
कुछ पिछली वफ़ायें याद आईं, कुछ अहद[3] कभी के याद आये,
कुछ मेरी निगाहें झुक सी गईं, कुछ उनकी नज़र शर्मा सी गई।

◇ ◇ ◇

---

१. अनुभूति से २. छुटकारा ३. वायदे

मुसाफ़िर

मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
जवानी की वादी के सन्दां[1] नज़ारे,
मोहब्बत के, गर्दूं के[2] रक़्सां[3] सितारे,
तुझे रास्ते में करेंगे इशारे,
कि आ हम सिखायें तुझे दिल लगाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
हसीनों पे बिजली गिराता गुज़र जा,
तमन्ना के शोले बुझाता गुज़र जा,
नज़र से नज़र यूँ मिलाता गुज़र जा,
तुझे जैसे आता नहीं मुस्कराना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
मनाज़िर की देवी न जादू जगाये,
क़दम तेरे पकड़ें न बाग़ों के साये,
नज़र हर कली हाथ जोड़े न आये,
तख़य्युल का[4] रंगीन धोका न खाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
इशारे से तुझ को बुला ले न साक़ी,
तुझे मैकदे में बिठा ले न साक़ी,
तेरे दिल में ये बात डाले न साक़ी,
कि ये जिन्दगी क्या है, पीना-पिलाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !

---

१. मुस्कराते २. आकाश ३. नृत्यशील ४. कल्पना

बहुत राह में खानक़ाहें[1] मिलेंगी,
मशाइख़ की[2] तफ़रीहगाहें[3] मिलेंगी,
मज़ाहब की[4] पुर-पेच राहें मिलेंगी,
नहीं जिनमें मंजिल का कोई ठिकाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
सरे-राह ग़द्दार अक्सर मिलेंगे,
तहे-आस्ती[5] जिनके खंजर मिलेंगे,
बहुत तुझको ऐसे भी रहबर[6] मिलेंगे,
फ़क़त[7] याद है जिनको रस्ता भुलाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
उठेंगी गरजती घनेरी घटायें,
डकारेंगी क्या-क्या अंधेरी फ़ज़ायें[8],
निगल जायेंगी राह काली बलायें,
तुझे भी न जुल्मत[9] बना ले निशाना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !
कोई तुझ को बाग़ी कहे भी तो क्या है ?
जवानी मज़ालिम[10] सहे भी तो क्या है ?
जमी पर तेरा ख़ूं बहे भी तो क्या है ?
ये तेरा ज़माना है तेरा ज़माना !
मुसाफ़िर ! कहीं राह मत भूल जाना !

(१९४२)

---

१. धर्म-मठ २. शेख़ों की ३. क्रीड़ास्थल ४. धर्मों की ५. आस्तीन के नीचे ६. नेता ७. केवल ८. वातावरण ९. अन्धकार १०. अत्याचार

जिन्दगी

टिमटिमाते हुए आरिज़ पे[१] ये अश्कों की[२] क़तार,
मुझ से इस दर्जा ख़फ़ा आप से इतनी बेज़ार,
मैंने कब तेरी मोहब्बत से किया है इन्कार ?

मुझ को इक लम्हा कभी चैन भी आया तुझ बिन ?
इश्क़ ही एक हक़ीक़त[३] तो नहीं है लेकिन,
जिन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

सोच दुनिया से अलग भाग के जायेंगे कहां ?
अपनी जन्नत भी बसायें तो बसायेंगे कहां ?
चैन इस आलमे-अफ़क़ार में[४] पायेंगे कहां ?

फिर ज़माने से निगाहों को चुराना कैसा ?
इश्क़ की ज़िद में फ़राइज़ को[५] भुलाना कैसा ?
जिन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

तीरे-इफ़लास से[६] कितनों के कलेजे हैं फ़िगार[७],
कितने सीनों में है घुटती हुई आहों का ग़ुबार,
कितने चेहरे नज़र आते हैं तबस्सुम का[८] मज़ार[९],

१. कपोल पर २. आंसुओं की ३. वास्तविकता ४. चिंताओं के संसार में ५. कर्तव्यों को ६. निर्धनता-रूपी तीर से ७. घायल ८. मुस्कराहट का ९. समाधि

इक नज़र भूल के इस सिम्त[1] भी देखा होता,
कुछ मोहब्बत के सिवा और भी सोचा होता,
ज़िन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

रंजे-गुर्बत के[2] सिवा जब्र के पहलू भी तो है,
जो टपकते नहीं आंखों से वो आंसू भी तो है,
ज़ख्म खाये हुए मज़दूर के बाज़ू भी तो हैं !

खाक और खून में ग़ल्तां[3] हैं नज़ारे कितने,
क़ल्बे-इन्सां में[4] दहकते है शरारे कितने,
ज़िन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

अर्सा-ए-दहर पे[5] सर्माया-ओ-मेहनत की[6] ये जंग,
अम्नो-तहज़ीब के[7] रुख़्सार से[8] उड़ता हुआ रंग,
ये हुकूमत, ये ग़ुलामी, ये बग़ावत की उमंग !

क़ल्बे-आदम के[9] ये रिस्ते हुए कुहना[10] नासूर,
अपने एहसास से है फ़ितरते-इन्सां[11] मजबूर,
ज़िन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

---

१. ओर २. निर्धनता के दुख के ३. लतपत ४. मानव-हृदय में ५. संसार-रूपी मैदान ६. पूंजी और परिश्रम ७. शान्ति और संस्कृति . मानव-हृदय के १०. पुराने ११. मानव-प्रकृति

आपको बन्दे-ग़ुलामी से[1] छुड़ाना है हमें,
ख़ुद मोहब्बत को भी आज़ाद बनाना है हमें,
इक नई तर्ज़ पे दुनिया को सजाना है हमें !

तू भी आ, वक़्त के सीने में शरारा बन जा,
तू भी अफ़लाके-बग़ावत का[2] सितारा बन जा,
ज़िन्दगी सिर्फ़ मोहब्बत तो नहीं है 'अंजुम' !

(१९४२)

◦ ◦ ◦

१. परतन्त्रता की क़ैद २. विद्रोह-रूपी आकाश का

ज़िन्दगी के मोड़ पर

हँस रही है रूबरू रंगीं बहार
कितने नज़ारे हैं जन्नत-दर-किनार[1]
रास्ता तकती है कब से रहगुज़ार[2]
मुड़ के लेकिन देखता हूं बार-बार
आ गया हूँ दूर किसको छोड़कर, चुप खड़ा हूँ ज़िन्दगी के मोड़ पर
जाने किसका है अभी तक इन्तज़ार !

कितने होंटों पर है अहदे-दिलनशीं[3]
बढ़ रहे हैं कितने दस्ते-नाज़नीं[4]
मुन्तज़िर हैं कितने आग़ोशे-हसीं[5]
मुझको लेकिन है न जाने क्या यक़ीं
रह गई है जम के इक जानिब नज़र, चुप खड़ा हूँ ज़िन्दगी के मोड़ पर
जाने किसका है अभी तक इन्तज़ार !

हो चुकी है गुल उफ़क़ की सुर्खियां
तीरगी है कारवां-दर-कारवां
बुझ चुका है मेरी नजरों में जहां
कुछ नहीं मालूम जाना है कहां
ज़ुल्मतों में खो गई है रहगुज़र, चुप खड़ा हूँ ज़िन्दगी के मोड़ पर
जाने किसका है अभी तक इन्तज़ार !

(१९४३)

◇ ◇ ◇

---

१. स्वर्ग की गोद में २. मार्ग ३. हृदय-स्पर्शी प्रतिज्ञायें ४. सुन्दरियों के हाथ ५. सुन्दर गोदें

मराहिल[1]

एक लम्हे को भी औक़ात की गर्दिश[2] न थमी,
हस्बे-दस्तूर[3] महो-साल[4] बदलते ही रहे।
एक लौ, एक लगन, एक लहक दिल में लिये,
हम मोहब्बत की कठिन राह पे चलते ही रहे।

कितने पुरपेच[5] मराहिल को किया तै हमने,
वादियां कितनी मिलीं बीच में दुशवार-गुज़ार[6]।
सैंकड़ों संगे-गिरां[7] राह में हाइल थे मगर,
एक लम्हे को भी टूटी न जुनूं[8] की रफ़्तार।

आज छाये हैं वो घनघोर अंधेरे लेकिन,
जिन में ढूंडे से भी मिलते नहीं राहों के सुराग़[9]।
वो अंधेरे, कि निकलते हुए डरती हो निगाह,
सामने हो तो नज़र आये न मंज़िल का चिराग़।

मुझसे बदज़न[10] न हो ऐ दोस्त कि मेरी नज़रें,
क्या हुआ पेचो-ख़मे-राह में[11] उलझी हैं अगर।
रोदे-कुहसार की[12] हर लम्हा भटकती मौजें[13],
अपनी मंज़िल की तरफ़ ही तो रहीं गर्मे-सफ़र[14]।

---

१. रास्ते, मंज़िलें २. काल-चक्र ३. नियमानुसार ४. महीने और वर्ष ५. पेचदार ६. कठिन ७. भारी पत्थर (बाधायें) ८. उन्माद ९. चिह्न १०. ख़फ़ा ११. मार्ग के पेचों में १२. पहाड़ी नदी की १३. लहरें १४. गतिशील

मुझसे बरगश्ता[1] न हो तू कि मेरा दिल है वही,
क्या हुआ फ़िक्र[2] के छाये हैं जो गहरे बादल।
चश्मे-ज़ाहिर[3] से जो छुप जाये तो छुप जाने दे,
अब्र में[4] बुझ नहीं जाती है क़मर[5] की मशअ़ल।

मेरे चेहरे पे जो है वक़्त का शबगूं परतौ[6],
है उसी अक्स[7] से धुँदला तेरा आईना-ए-दिल[8]।
आ कि ये लम्हा-ए-हाज़िर[9] भी नहीं है अपना,
है परे आज की ज़ुल्मात से[10] अपनी मंज़िल।

इन घुप्रांधार अंधेरों से गुज़रने के लिये,
ख़ूने-दिल से कोई मशअ़ल तो जलानी होगी।
इश्क़ के रफ़्ता-ओ-सरगश्ता जुनूं[11] को ए दोस्त!
ज़िन्दगानी की अदा आज सिखानी होगी।

(१९४९)

० ० ०

---

१. रुष्ट २. चिंता ३. बाह्य दृष्टि ४. बादल ५. चांद ६. अंधकार-मय प्रतिबिम्ब ७. प्रतिछाया ८. दिल-रूपी आईना ९. वर्तमान क्षण १०. अंधेरों से ११. आवेश-पूर्ण और गतिशील उन्माद

फ़रेबे-बहार

(एक लम्बी नज़्म के कुछ बन्द)

मैं तो यूँ खुश था कि आजाद हुआ मेरा वतन
मैं तो यूँ खुश था कि छूटा वो गुलामी का गहन
मैं तो यूँ खुश था कि अब रात ने खींचा दामन
मैं तो यूँ खुश था कि अब सुबह हुई जल्वा-फ़िग़न[1]
ढल गया नूर के साँचे में चमन आज मेरा
अपने गुलशन की बहारों पे है अब राज मेरा

मैं तो यूँ खुश था कि वो वक़्त नहीं है अब दूर
जब हर इक कासा-ओ-साग़र से[2] उठे मौजे-सरूर[3]
चेहरा-ए-खाक पे उतरे गुहरो-सीम का[4] नूर
रंगे-गुल से[5] हो शराबोर[6] जबीने-मजदूर[7]
देर ही क्या है कली दिल की खिली जाती है
खुद गले ख्वाब के ताबीर[8] मिली जाती है

मैं तो यूँ खुश था कि फूलों की गुंधेगी हैकल[9]
चांदनी खाक पे डालेगी रुपहला[10] आंचल
मौज के[11] पाँव में मोती की बजेगी छागल
लबे-जू[12] नर्म हवा आ के खिलायेगी कंवल
जाल जरतार शुआओं का[13] बुना था मैंने
कितनी हँसती हुई किरनों को चुना था मैंने

---

१. प्रकट २. भीख माँगने के प्याले और शराब के प्याले से ३. नशे की ४. '' [illegible] का ५. फूल के रंग से ६. लतपत ७. मजदूर का माथा ८. स्वप्नफल ९. गले का जेवर १०. रजत ११. लहर के १२. नदी किनारे १३. रजत किरनों का

मैं तो यूं खुश था कि अब गूंज उठेंगे वो साज़
फैल जायेगी फ़ज़ाओं में[1] अमल की[2] आवाज़
ज़र्रे-ज़र्रे में समा जायेगा ज़ौके-परवाज़[3]
ज़िन्दगी अपनी अदाओं पे करेगी खुद नाज़
एक लै सीना-ए-आलम में[4] मचल जायेगी
आज से वक़्त की रफ़्तार बदल जायेगी

न सही आज, हर इक ज़ुल्फ़ संवर जायेगी कल
आज रंगत है जो फूलों की निखर जायेगी कल
नब्ज़ खाशाक की[5] गुलशन में उभर जायेगी कल
मौज गंगा की हिमालय से गुज़र जायेगी कल
अपना हर रंग धनुक खाक पे बरसा देगी
कल ज़मीं हिन्द की खुरशीद[6] को शर्मा देगी

क्या खबर थी कि नज़र खुद है नज़ारों का तलिस्म[7]
रात की रात है ये चाँद-सितारों का तलिस्म
ये बरसते हुए मोती हैं शरारों का तलिस्म
यूं खिज़ां छुप के रचायेगी बहारों का तलिस्म
टूट जायेगा कोई दम में ये अफ़सूने-बहार[8]
नोके-हर खार से[9] टपकेगा अभी खूने-बहार

---

१. वातावरण में २. क्रिया की ३. उड़ानें भरने की प्रवृत्ति
४. संसार के हृदय में ५. कूड़े-करकट की ६. सूरज को ७. जादू
८. बहार का जादू ९. हर कांटे की नोक से

हाय लगते ही तो रंगे-गुले-तर[1] छूट गया
हार गुंधने भी न पाया था अभी, टूट गया
जाम लब तक भी न आया था अभी, फूट गया
मेरे ख़्वाबों को नहीं, कोई मुझे लूट गया

मैंने जिस नक़्श में भर दी थी शफ़क़ की[2] तनवीर[3]
वक़्त ने सामने रख दी वही जलती तस्वीर

क्या ख़बर थी कि गिरफ़्तारे-फ़ुसूं[4] होना है
सैद को[5] और अभी सैदे-ज़बूं[6] होना है
इस चमन को अभी आलूदा-ए-ख़ूं[7] होना है
ग़म के शोले को अभी और फ़ज़ूं[8] होना है

क्या ख़बर थी कि फ़क़त नाम है आज़ादी का
ये भी इक तर्ज़ है सय्याद की[9] सय्यादी का

क्या ख़बर थी कोई तदबीर न काम आयेगी
गर्दिशे-वक़्त[10] लिये ख़ून का जाम आयेगी
नूर की मौज[11] न हर्गिज़ तहे-दाम[12] आयेगी
सुबह होने भी न पायेगी कि शाम आयेगी

किसको मालूम था ये ज़हर भी पीना होगा
सर्द फिर हिन्द के माथे का पसीना होगा

---

१. भीगे हुए (खिले हुए) फूल का रंग २. सूर्य्यास्त की लालिमा ३. आभा ४. जादू में गिरफ्तार ५. शिकार को ६. निकृष्ट आखेट ७. रक्तमय ८. अधिक ९. शिकारी की १०. समय का चक्र ११. प्रकाश की लहर १२. जाल में

कुछ हो, उम्मीद की सीने में झलक आज भी है
दिल में बुझते हुए शोले की चमक आज भी है
पर्दा-ए-अब्र में[1] हल्की-सी धनुक आज भी है
फूल खिलने की हवाओं में महक आज भी है
इक जरा सब्र कि गुलरंग घटा छायेगी
इस गुलिस्तां में कोई सुर्ख़ बहार आयेगी।
(१९४७)

◇ ◇ ◇

१. बादल के पर्दे में

पैग़ाम

[प्रगतिशील साहित्यकारों के अधिवेशन (लाहौर) को]

एक मेरा क्या ऐ फ़नकारो[1] वक़्त का भी पैग़ाम यही है,
जीवन को हम जीवन दे दें आज हमारा काम यही है।
आज खुले बन्दों ये दुनिया दो तबक़ों के[2] बीच बटी है,
चांदी सोने के अंधियारे में जीवन की जोत घटी है।
पूंजीवाद की सारी चालें निर्धन जनता जान चुकी है,
आज ये दुनिया अपने अस्ली दुश्मन को पहचान चुकी है।
चौंक उठी है जनता सारी जन-जन गन-गन जाग उठा है,
आज बग़ावत का हर दिल से तूफ़ानी इक राग उठा है।
एक तरफ़ है अमृत सागर एक तरफ़ हैं धारे विस के,
पूछ रही है दुनिया हम से बोलो ! अब तुम साथ हो किसके ?
क्या जनता का, क्या जीवन का ऐसे में अपमान करें हम ?
आओ खुले बन्दों अब जानिबदारी का एलान करें हम।
हम साथी हैं मज़लूमों के, हम साथी हैं मज़दूरों के,
हम साथी हैं दहक़ानों के[3], हम साथी हैं मज़दूरों के।
देखो देखो कितने भूखे ख़ाक ज़मीं की फांक रहे हैं,
देखो देखो जेल से हम को कितने साथी झांक रहे हैं।
युद्ध की तैयारी में लगे हैं फिर से पूंजीवादी दुश्मन,
आओ बना दें अब की हम धन वालों ही को युद्ध का ईंधन।

---

१. कलाकारो २. वर्गों के ३. किसानों के

आज दुखी हिरदों से[1] देखो मानवता की मौज[2] उठी,
अम्न का परचम[3] हाथ में लेकर जनता की इक फ़ौज उठी।
आज से हर इक गीत हमारा वक़्त की इक ललकार बनेगा,
आज से अपने हाथों में ख़ुद अपना क़लम तलवार बनेगा।
अपने गीतों और नग़्मों से रंग नया बरसा दें आओ,
लाल फरेरा[4] आज अदब[5] की दुनिया पर लहरा दें आओ।
(१९४९)

◇ ◇ ◇

हज़ार काकुले-गेती में[6] पेचो-ख़म[7] हैं तो क्या?
ये ज़ुल्फ़ आज नहीं कल संवर तो सकती है।।

◇ ◇ ◇

१. हृदयों से २. लहर ३. झंडा ४. झंडा ५. साहित्य की
६. संसार-रूपी केशों में ७. उलझाव

अम्न-नामा

(एक लम्बी नज़्म का कुछ भाग)

पिला साक़िया बादा-ए-ख़ाना-साज़[१] ,
कि हिन्दोस्तां पर रहे हमको नाज़।
मोहब्बत है ख़ाके-वतन[२] से हमें,
मोहब्बत है अपने चमन से हमें।
हमें अपनी सुबहों से शामों से प्यार,
हमें अपने शहरों के नामों से प्यार।
हमें प्यार अपने हर इक गांव से,
घने बरगदों की घनी छांव से।
हमें प्यार अपनी इमारात से[३] ,
हमें प्यार अपनी रिवायात से[४] ।
उठाये जो कोई नज़र क्या मजाल,
तेरे रिंद[५] लें बढ़ के आँखें निकाल।
सलामत रहें अपने दश्तो-दमन[६] ,
रहे गुनगुनाता हमारा गगन।
निगाहें हिमालय की ऊंची रहें,
सदा चाँद-तारों को छूती रहें।
रहे पाक गंगोत्री की फबन,
मचलती रहे ज़ुल्फ़े-गंगो-जमन।
रहे जगमगाता ये संगम का रूप,
चमकती खुनक चाँदनी, नर्म धूप।

---

१. घर की खेंची हुई (तेज़) शराब २. देश की मिट्टी ३. भवनों से ४. परम्पराओं से ५. मद्यप ६. जंगल और टीले

झलकती रहें ये अशोका की लाट,
ये गोकुल की गलियाँ, ये काशी के घाट।
लुटाती रहें अपने नैनों का मद,
ये सुबहे-बनारस, ये शामे-अवध।
नहाता रहे नर्म किरनों में ताज,
रहे ता-क़यामत मोहब्बत की लाज।
अजनता के बुत रक़्स[1] करते रहें,
हसीं ग़ार[2] तारों से भरते रहें।
रहें मुस्कराती हसीं वादियां,
रहें शाद[3] जंगल की शह-जादियां।
हरी खेतियां लहलहाती रहें,
जवां लड़कियाँ गीत गाती रहें।
लहकता रहे सब्ज मैदां में धान,
जमीनों पे बिछते रहें आसमान।
फ़ज़ा[4] में घटायें गरजती रहें,
जवां छागलें तट पे बजती रहें।
उड़ाती रहे आँचलों को हवा,
मल्हारों की बूँदों में गूँजे सदा।
महकते रहें सब्ज आमों के बौर,
बढ़ाती रहे पींग झूले की डोर।
पपीहे की पी-पी तो कोयल की कूक,
उठाती रहे नर्म सीनों में हूक।

---

१. नृत्य २. सुन्दर गुफायें ३. प्रसन्न ४. आकाश

दहकती रहे पाक होली की आग,
रहे खेलती नारियाँ पी से फाग।
सदा गाये राधा कन्हैया के गुन,
मचलती रहे बन में मुरली की धुन।
सलामत ये मथुरा की नगरी रहे,
छलकती ये रंगों की गगरी रहे।
रहे ये दिवाली की जगमग बहार,
मंडेरों पे जलते दियों की क़तार।
फ़ज़ा रोशनी में नहाती रहे,
हमारी ज़मीं जगमगाती रहे।
रहे ये बसन्तों के मेले की धूम,
रहें शाद ये गीत गाते हुजूम।
हसीनों के लहकें बसन्ती लिबास,
रहे नर्म चेहरों पे हल्की मिठास।
हसीं राखियाँ झलझलाती रहें,
झमाझम सितारे लुटाती रहें।
रहें अपने भाई पे बहनों को नाज़,
ये मासूम नर्मी, ये मीठा गुदाज़[1]।
घरों का तक़द्दुस[2] रहे बरक़रार,
ये बेटों के माथे पे माओं का प्यार।
रहे शादो-आबाद सहनों की धूम,
रहें आंगनों में चहकते नुजूम[3]।

---

१. नर्मी २. पवित्रता ३. सितारे (बच्चे)

सलामत रहे दुल्हनों की फबन,
सलामत रहें दिल में खिलते चमन।
सलामत रहे अंखड़ियों की हया[१],
सलामत रहे घूंघटों की अदा।
सलामत दोपट्टों की रंगीं बहार,
सलामत जवां आँचलों का वक़ार[२]।
सलामत रहे पाक अफ़शां[३] का नूर[४],
सलामत रहे बीदियों का ग़रूर।
सलामत रहे काजलों की लकीर,
सलामत रहें नर्म नज़रों के तीर।
सलामत रहे चूड़ियों की खनक,
सलामत रहे कंगनों की चमक।
सलामत हसीनों के सोलह सिंगार,
ये जूड़े पे लिपटे चंबेली के हार।
सलामत रहें मिरग-नैनों के बान,
सलामत रहे मरने वालों की शान।
सलामत वफ़ाओं के अरमां रहें,
सलामत मोहब्बत के पैमां[५] रहें।
सलामत रहें हीर-रांझे के गीत,
रहे हार में भी मोहब्बत की जीत।
लजाना रहे, मुस्कराना रहे,
मनाना रहे, रूठ जाना रहे।

---

१. लज्जा २. शान (गौरव) ३. माथे का पवित्र सिंदूर
४. प्रकाश ५. प्रण

मोहब्बत के चश्मे उबलते रहें,
जवाँ-साल[1] नग्मों में ढलते रहें।
रहे 'जोश'[2] की शबनमी शायरी,
मै-ओ-गुल की मौजूँ हसीं साहरी[3]।
दिलों पर रहे वज्द-आगीं सुकूत[4],
रहे गुनगुनाता हुआ 'मेघदूत'।
रहे धूम 'टैगोर'-ओ-'इक़बाल' की,
रहे शान पंजाब-ओ-बंगाल की।
रहे नाम अपने अदब[5] का बुलंद[6],
दिलों में समाया रहे 'प्रेमचन्द'।
सदा जिन्दगानी ग़ज़लख्वाँ[7] रहे,
ज़माने मे 'ग़ालिब' का 'दीवाँ[8]' रहे।
मचलती रहे मस्त बीना की लै,
बरसती रहे सात रंगों की मै।
दहकता रहे अपने दीपक का राग,
कलेजों में लगती रहे नर्म आग।
रहे गूँजती घुंघरुओं की खनक,
दफ़ों की[9] सदा[10] ढोलकों की गमक।
यह घूमर, ये कत्थक के तोड़े रहें,
जवाँ नाच दिल को झंझोड़े रहें।

---

१. नवीनतम २. 'जोश' मलीहाबादी ३. शराब और फूलों की सुन्दर जादूगरी ४. नशीली चुप्पी ५. साहित्य ६. ऊंचा ७. गीत गाने वाली ८. कविता-संग्रह ९. डफलियों की १०. आवाज

रहे साक़िया बादाख्वारों को[1] ख़ैर,
रहे साक़िया तेरे प्यारों की ख़ैर।
उभरता रहे ज़िन्दगानी का जोश,
रहे तेरे रिंदों को दुनिया का होश।
सलामत तेरा जाम-ओ-मीना[2] रहे,
बड़े लुत्फ़ के साथ पीना रहे।
उठा जाम हाँ दौर साक़ी रहे,
जहां में सदा अम्न बाक़ी रहे।
(१९५२)

---

१. मद्यपों की २. सुराही और प्याला

२५ दिसम्बर*

('सफ़िया' को)

ये तेरे प्यार की ख़ुशबू से महकती हुई रात,
अपने सीने में छुपाये तेरे दिल की धड़कन,
आज फिर तेरी अदा से मेरे पास आई है।

अपनी आंखों में तेरी ज़ुल्फ़ का डाले काजल,
अपनी पलकों में सजाये हुए अरमानों के ख़्वाब,
अपने आँचल पे तमन्ना के सितारे टांके।

गुनगुनाती हुई यादों की लवें जाग उठीं,
कितने गुज़रे हुए लम्हों के चमकते जुगनू
दिल के हाले में[1] लिये नाच रहे हैं कब से।

कितने लम्हे जो तेरी ज़ुल्फ़ के साये के तले,
ग़र्क़ होकर तेरी आँखों के हसीं साग़र में[2],
ग़मे-दौरां से[3] बहुत दूर गुज़ारे मैंने।

कितने लम्हे कि तेरी प्यार-भरी नज़रों ने,
किस सलीक़े से[4] सजाई मेरे दिल की महफ़िल,
किस क़रीने से[5] सिखाया मुझे जीने का शऊर।

---

* २५ दिसम्बर जांनिसार 'अख़्तर' और उसकी स्वर्गवासी पत्नी 'सफ़िया' की शादी की वर्षगांठ का दिन है।

१. कुंडल में २. प्याले में ३. सांसारिक दुखों से ४. सुन्दर ढंग से ५. तरीके से

कितने लम्हे कि हसीं नर्म सुबक[1] आंचल से,
तूने बढ़कर मेरे माथे का पसीना पोंछा,
चांदनी बन गई राहों की कड़ी धूप मुझे।

कितने लम्हे कि ग़मे-ज़ीस्त के[2] तूफ़ानों में,
ज़िन्दगानी की जलाये हुए बाग़ी मशअ़ल,
तू मेरा अ़ज़्मे-जवां[3] बन के मेरे साथ रही।

कितने लम्हे कि ग़मे-दिल से उभर कर हमने,
इक नई सुबहे-मोहब्बत की[4] लगन अपनाई,
सारी दुनिया के लिये, सारे ज़माने के लिये।

इन्ही लम्हों के गुलावेज़[5] शरारों का तुझे,
गूंधकर आज कोई हार पहना दूं, आजा,
चूमकर मांग तेरी तुझको सजा दूं आजा।

(१६५२)

○ ○ ○

१. हल्के २. जीवन के दुःखों के ३. दृढ संकल्प ४. प्रेम के प्रभात की ५. फूलों ऐसे

ख़ाके-दिल

['सफ़िया' के देहांत पर लखनऊ से जाते हुए]

लखनऊ मेरे वतन, मेरे चमनज़ार[1] वतन !
तेरे गहवारा-ए-आग़ोश में[2] ऐ जाने-बहार[3]
अपनी दुनिया-ए-हसीं[4] दफ़्न किये जाता हूं
तूने जिस दिल को धड़कने की अदा बख़्शी थी
आज वो दिल भी यहीं दफ़्न किये जाता हूं
दफ़्न है देख मेरा अहदे-बहारां[5] तुझ में
दफ़्न है देख मेरी रूहे-गुलिस्तां[6] तुझ में
मेरी गुलपोश[7] जवांसाल[8] उमंगों का सुहाग
मेरी शादाब तमन्ना के महकते हुए ख़्वाब
मेरी बेदार जवानी के फ़रोज़ां[9] महो-साल[10]
मेरी शामों की मलाहत[11], मेरी सुबहों का जमाल[12]
मेरी महफ़िल का फ़साना, मेरी ख़लवत का फ़ुसूं[13]
मेरी दीवानगी-ए-शौक़[14], मेरा नाज़े-जुनूं[15]
मेरे मरने का सलीक़ा, मेरे जीने का शऊर
मेरा नामूसे-वफ़ा, मेरी मोहब्बत का ग़रूर
मेरी नग़्मों का तरन्नुम, मेरे नग़्मों की पुकार
मेरे शे'रों की सजावट, मेरे गीतों का सिंगार

---

१. वाटिका २. गोद के पालने में ३. वसन्तों के जीवन ४. सुन्दर संसार ५. बहारों का ज़माना ६. बाग़ की आत्मा ७. फूलों से लदी-ढकी ८. जवान ९. प्रकाशमान १०. महीने और वर्ष ११. सलोनापन १२. सौन्दर्य १३. एकाकीपन का जादू १४. इश्क़ का दीवानापन १५. उन्माद का गौरव

लखनऊ ! अपना जहां सौंप चला हूं तुझको
अपना हर ख़्वाबे-जवां[1] सौंप चला हूं तुझको
अपना सर्माया-ए-जां[2] सौंप चला हूं तुझको

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन !

ये मेरे प्यार का मदफ़न[3] ही नहीं है तनहा
दफ़्न है इसमें मोहब्बत के ख़ज़ाने कितने
एक उन्वान में[4] मुज़मिर[5] हैं फ़साने कितने
इक बहन अपनी रफ़ाक़त की[6] क़सम खाये हुए
एक मां मर के भी सीने में लिये मां का गुदाज[7]
अपने बच्चों के लड़कपन को कलेजे से लगाये
अपने खिलते हुए मासूम शगूफ़ों के[8] लिये
बंद आंखों में बहारों के जवां ख़्वाब बसाये ·

ये मेरे प्यार का मदफ़न ही नहीं है तनहा
एक साथी भी तहे-ख़ाक[9] यहां सोती है
अर्सा-ए-दह्‌र के[10] बेरहम कशाकश का शिकार
जान देकर भी ज़माने से न माने हुए हार
अपने तेवर में वही अज़्मे-जवांसाल[11] लिये

---

१. जवान सपना २. जीवन की पूंजी ३. कब्र ४. शीर्षक
५. निहित ६. साथ की ७. ममता ८. कलियों के ९. मिट्टी के नीचे
१०. संसार-रूपी युद्ध-क्षेत्र की ११. जवान संकल्प

देख इक शम्मअ् सरे-राहगुज़र जलती है,
जगमगाता है अगर कोई निशाने-मंज़िल,
ज़िन्दगी और भी कुछ तेज क़दम चलती है।

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन !

देख इस ख्वाबगहे-नाज़ पे[१] कल मौजे-सबा[२]
ले के नौरोज़े-बहारां की[३] ख़बर आयेगी
सुर्ख फूलों का बड़े नाज से गूंधे हुए हार
कल इसी खाक पे गुलरंग सहर[४] आयेगी
कल इसी खाक के ज़र्रों में समा जायेगा रंग
कल मेरे प्यार की तस्वीर उभर आयेगी

ऐ मेरी रूहे-चमन ! खाके-लहद से[५] तेरी
आज भी मुझको तेरे प्यार की बू आती है
ज़ख्म सीने के महकते हैं तेरी खुशबू से
वो महक है कि मेरी सांस घुटी जाती है
मुझ से क्या बात बनायेगी जमाने की जफ़ा
मौत खुद आंख मिलाते हुए शर्माती है
मैं और इन आंखों से देखूं तुझे पेवंदे-ज़मीं[६]
इस क़दर जुल्म, नहीं, हाय नहीं, हाय नहीं

१. प्रेमिका के शयनागार पर २. प्रभात-समीर की तरह
३. वसन्त के आगमन की ४. गुलाबी प्रभात ५. कब्र की मिट्टी से
६. ज़मीन में दफ़न

कोई ऐ काश बुझा दे मेरी आंखों के दिये
छीन ले मुझसे कोई काश निगाहें मेरी
ऐ मेरी शम्मअ्-वफ़ा ! ऐ मेरी मंज़िल के चिराग़
आज तारीक[1] हुई जाती हैं राहें मेरी

तुझको रोऊं भी तो क्या रोऊं कि इन आंखों में
अश्क पथर की तरह जम से गये है मेरे
ज़िन्दगी अर्सा - गहे - जहदे - मुसलसल[2] ही सही
एक लम्हे को क़दम थम से गये हैं मेरे

फिर भी इस अर्सा-गहे-जहदे मुसलसल से मुझे
कोई आवाज़ पे आवाज़ दिये जाता है
आज सोता ही तुझे छोड़ के जाना होगा
नाज़ ये भी ग़में-दौरां का[3] उठाना होगा

ज़िन्दगी देख मुझे हुक्मे - सफ़र[4] देती है
एक दिल शोला-ब-जां[5] साथ लिये जाता हूं
हर क़दम तूने कभी अज़्मे-जवां[6] बख़्शा था
मैं वही अज़्मे - जवां साथ लिये जाता हूं

चूम कर आज तेरी ख़ाके-लहद के[7] ज़र्रे
अनगिनत फूल मोहब्बत के चढ़ाता जाऊं

१. अंधेरी २. निरंतर संग्राम का क्षेत्र ३. सांसारिक दुखों का
४. गतिशीलता का आदेश ५. आग की तरह दहकता ६. जवान संकल्प
७. क़ब्र की मिट्टी के

जाने इस सिम्त[1] कभी मेरा गुज़र हो कि न हो
आख़री बार गले तुझको लगाता जाऊं

लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन !

देख इस ख़ाक को आंखों में बसा कर रखना
इस अमानत को कलेजे से लगाकर रखना
लखनऊ ! मेरे वतन, मेरे चमनज़ार वतन !

(१९५३)

◇ ◇ ◇

---

१. ओर

ख़ामोश आवाज़

(जनवरी की चांदनी रात में 'सफ़िया' के मज़ार पर)

कितने दिन में आये हो साथी,
मेरे सोते भाग जगाने ।
मुझसे अलग, इस एक बरस में,
क्या-क्या बीती तुमपे न जाने ।

देखो कितने थक से गये हो,
कितनी थकन आंखों में घुली है ।
आओ तुम्हारे वास्ते साथी !
अब भी मेरी आग़ोश खुली है ।

चुप हो क्यों, क्या सोच रहे हो ?
आओ, सब कुछ आज भुला दो ।
आओ, अपने प्यार से साथी,
फिर से मुझे इक बार जिला दो ।

इतने दिन के बाद कहीं तुम,
आये हो साजन मेरे द्वारे ।
आज अंधेरे अंगना मोरे,
नाच उठे हैं चांद - सितारे ।

देखो कितनी रात हसीं है,
जैसे मेरा प्यार खिला हो।
आज तो ऐसी जोत है जैसे,
चांद ज़मीं से आन मिला हो।

बोलो साथी, कुछ तो बोलो,
कब तक आखिर आह भरूंगी ?
तुमने मुझ पर नाज किये हैं,
आज मै तुमसे नाज़ करूंगी।

आओ मैं तुमसे रूठ सी जाऊं,
आओ मुझे तुम हंस के मना लो।
मुझ में सचमुच जान नहीं है,
आओ मुझे हाथों से उठालो।

तुमको मेरा ग़म है साथी,
कैसे अब इस ग़म को भुलाऊं।
अपना खोया जीवन बोलो,
आज कहां से ढूंड के लाऊं।

ये न समझना मेरे साजन !
दे न सकी मैं साथ तुम्हारा।
ये न समझना मेरे दिल को,
आज तुम्हारा दुख है गवारा।

ये न समझना मैंने तुमसे,
जान के यूं मुंह मोड़ लिया है।
ये न समझना मैंने तुमसे,
दिल का नाता तोड़ लिया है।

ये न समझना मैंने तुमसे,
आज किया है कोई बहाना।
दुनिया मुझसे रूठ चुकी है,
साथी तुम भी रूठ न जाना।

आज भी साजन मैं हूं तुम्हारी,
आज भी तुम हो मेरे अपने।
आज भी इन आंखों में बसे हैं,
प्यार के गहरे अनमिट सपने।

दिल की धड़कन डूब भी जाये,
दिल की सदायें थक न सकेंगी।
मिट भी जाऊं फिर भी तुमसे,
मेरी वफायें थक न सकेंगी।

ये तो पूछो तुमसे छुटकर,
मेरे दिल पर क्या-क्या गुज़री।
तुम बिन मेरी नाव तो साजन,
ऐसी डूबी फिर न उभरी।

एक तुम्हारा प्यार बचा है,
वर्ना सब कुछ लुट-सा गया है।
एक मुसलसल रात कि जिसमें,
आज मेरा दम घुट-सा गया है।

आज तुम्हारा रस्ता तकते,
मैंने पूरा साल बिताया।
कितने तूफ़ानों की ज़द पर,
मैंने अपना दीप जलाया।

तुम बिन सारे मौसम बीते,
आये झोंके सर्द हवा के।
नर्म गुलाबी जाड़े गुज़रे,
मेरे दिल में आग लगा के।

सावन आया धूम मचाता,
घिर-घिर काले बादल छाये।
मेरे दिल पर जम से गये हैं,
जाने कितने गहरे साये।

चांद से जब भी बादल गुज़रा,
दिल से गुज़रा अक्स तुम्हारा।
फूल जो चटके मैंने जाना,
तुमने शायद मुझको पुकारा।

आईं बहारें मुझको मनाने,
तुम बिन मैं तो मुंह से न बोली।
लाख फ़ज़ा में गीत-से गूंजे,
लेकिन मैंने आंख न खोली।

कितनी निखरी सुबहें गुज़रीं,
कितनी महकी शामें छाईं।
मेरे दिल को दूर से तकने,
जाने कितनी यादें आईं।

इतनी मुद्दत बाद तो पीतम,
आज कली हिरदय की खिली है।
कितनी रातें जाग के साजन,
आज मुझे ये रात मिली है।

बोलो साथी कुछ तो बोलो,
कुछ तो दिल की बात बताओ।
आज भी मुझ से दूर रहोगे,
आओ, मेरे नज़दीक तो आओ।

आओ मैं तुमको बहला लूंगी,
बैठ तो जाओ मेरे सहारे।
आज तुम्हें क्यों ग़म है बोलो,
आज तो मैं हूँ पास तुम्हारे।

अच्छा मेरा ग़म न भुलाओ,
मेरा ग़म हर ग़म में समो लो।
इससे अच्छी बात न होगी,
ये तो तुम्हें मन्ज़ूर है बोलो।

ऊब से अपना दिल न दुखाना,
मेरे लिये फ़र्याद न करना।
मुझ से कुछ भी प्यार अगर है,
मेरा ग़म बर्बाद न करना।

मेरे ग़म को मेरे शायर!
अपने जवां गीतों में रचा लो।
मेरे गम को मेरे शायर!
सारे जग की आग बना लो।

मेरे ग़म की आंच से साथी,
चौंक उठेगा अज़्म तुम्हारा।
बात तो जब है लाखों दिल को,
छू ले अपने प्यार का धारा।

मैं जो तुम्हारे साथ नहीं हूं,
दिल को मत मायूस करो तुम।
तुम हो तनहा तुम हो अकेले,
ऐसा क्यों महसूस करो तुम।

आज हमारे लाखों साथी,
साथी ! हिम्मत हार न जाओ।
आज करोड़ों हाथ बढ़ेंगे,
एक ज़रा तुम हाथ बढ़ाओ।

अच्छा अब तो हँस दो साथी,
वर्ना देखो रो सी पड़ूंगी।
बोलो साथी, कुछ तो बोलो,
आज मैं सचमुच तुमसे लड़ूंगी।

जाग उठी लो दुनिया मेरी,
आई हँसी वो लब पे तुम्हारे।
देखो देखो मेरी जानिब,
दौड़ पड़े है चांद-सितारे।

झिलमिल झिलमिल किरनें आईं,
मुझको चन्दन हार पहनाने।
जगमग जगमग तारे आये,
फिर से मेरी मांग सजाने।

आई हवायें झांझ बजाती,
गीतों मोरा अंगना जागा।
मोरे माथे झूमर दमका,
मोरे हाथों कंगना जागा

जाग उठा है सारा आलम,
जाग उठी है रात मिलन की।
आओ ज़मीं की गोद में साजन,
सेज सजी है आज दुल्हन की।

आओ जाती रात है साथी!
प्यार तुम्हारा दिल में भर लूं।
आओ तुम्हारी गोद में साजन,
थक कर आंखें बंद सी कर लूं।

उट्ठो साथी! दूर उफ़क़ का,
नर्म किनारा कांप उठा है।
मेरे दिल की धड़कन बनकर,
सुबह का तारा कांप उठा है।

दिल की धड़कन! डूब के रह जा,
जागो नब्जो! थम सी जाओ।
फिर से मेरी बेनम आंखो!
पत्थर बन कर जम सी जाओ।

मेरे ग़म का ग़म न करो तुम,
अच्छा अब से ग़म न करूंगी।
मेरे इरादों वाले साथी,
जाओ मैं हिम्मत कम न करूंगी।

तुमको हँसकर रुख़्सत कर दूं,
सब कुछ मैंने हँस के सहा है।
तुम बिन मुझ में कुछ न रहेगा,
यूं भी अब क्या खाक रहा है।

देखो कितने काम पड़े हैं,
अच्छा अब मत देर करो तुम ।
कैसे जम के रह से गये हो ?
इतना मत अंधेर करो तुम ।

बोलो, तुमको कैसे रोकूं ?
दुनिया सौ इल्ज़ाम धरेगी ।
ऐसे पागल प्यार को साथी,
सारी खल्क़त[1] नाम धरेगी ।

आओ मैं उलझे बाल संवारूं,
मुझसे कोई काम तो ले लो ।
फिर से गले इक-बार लगाकर,
प्यार से मेरा नाम तो ले लो ।

अच्छा साथी ! जाओ सिधारो,
अब की इतने दिन न लगाना ।
प्यासी आँखें राह तकेंगी,
साजन जल्दी लौट के आना ।

लेकिन ठहरो ठहरो साथी,
दिल को ज़रा तैयार तो कर लूं ।
आओ मेरे परदेसी साजन,
आओ मैं तुमको प्यार तो करलूं ।

(१९५४)

° ° °

---

१. दुनिया या जनसाधारण

'ख़दीजा' के नाम

आज की रात तो मन्सूब[1] तेरे नाम से है !
आज क्यों चांद-सितारों पे नजर जायेगी ?
क्या रखा है जो बहारों पे नज़र जायेगी ?
कि तू ख़ुद महवशाने-चमनें-अंदाम से[2] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है।

एक तुग़ियाने-तरब[3] है मेरे काशाने में[4],
ज़िन्दगी नाच उठी है मेरे वीराने में,
शहर में एक क़यामत तेरे इक़्दाम से[5] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है।

दिल की धड़कन को इशारे की जरूरत न रही,
किसी रंगीन नजारे की जरूरत न रही,
रंग नजरों में तेरे आरिज़ो-गुलफ़ाम से[6] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

तेरी पलकों के झपकने की अदा काफ़ी है,
तेरी झुकती हुई आंखों का नशा काफ़ी है,
अब न शीशे से[7] ग़रज है न मै-ओ-जाम से[8] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

---

१. संबंधित २. फुलवाड़ी से सम्बन्धित (वस्तुओं) चाँद ऐसी सुन्दरियों में से ३. आनन्द की बाढ़ ४. घर में ५. आगमन से ६. पुष्पवर्ण कपोलों से ७. शराब की बोतल से ८. शराब और प्याले से

महकी - महकी तेरी ज़ुल्फ़ों की घटा छाई है,
तू मुझे कौनसी मंज़िल में उड़ा लाई है ?
जिन्दगी दूर बहुत शोरिशे-आलाम से[1] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

दिल में उतरी चली जाती हैं निगाहें तेरी,
मुझको हल्क़े में[2] लिये लेती हैं बाहें तेरी,
इक उजाला-सा मेरे गिर्द सरे-शाम से[3] है।
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

तेरे एहसास पे दुनिया की लताफ़त[4] सदके[5],
तेरी बदनाम वफ़ा पर मेरी शोहरत सदक़े,
इक ख़ुशी तुझको मेरे प्यार के इल्ज़ाम से है,
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

दिल में इक शौक का तूफ़ान बपा रहने दे,
अपना सिर तू मेरे शाने पे[6] झुका रहने दे,
इश्क़ बेताब सही हुस्न तो आराम से है,
आज की रात तो मन्सूब तेरे नाम से है !

(१९५७)

० ० ०

१. दुखों विपदाओं के कोलाहल से २ घेरे में ३. संध्या होते ही
४. मृदुलता ५. न्योछावर ६. कंधे पर

आख़री मुलाक़ात

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं;
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

दो पांव बने हरियाली पर
कुछ जगमग जुगनू जंगल से
ये एक कहानी नींद भरी
कुछ गुनगुन करते परवाने
कुछ उड़ते रंगीं गुब्बारे
ये चेहरा 'बन्ने' बूढ़ी का

इक तितली बैठी डाली पर
कुछ झूमते हाथी बादल से
इक तख़्त पे बैठी एक परी
दो नन्हे - नन्हे दस्ताने
'बब्बू' के दोपट्टे के तारे
ये टुकड़ा मां की चूड़ी का

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

अलसाई हुई रुत सावन की
इक टूटी रस्सी झूले की
सुलगी-सी अंगीठी जाड़ों में
कुछ चांदनी रातें गर्मी की
कुछ रूप हसीं काशानों का[1]
कुछ हार महकती कलियों के

कुछ सोंधी ख़ुशबू आंगन की
इक चोट कसकती कूल्हे की
इक चेहरा कितनी आड़ों में
इक लब पर बातें नर्मी की
कुछ रंग हरे मैदानों का
कुछ नाम वतन की गलियों के

---

१. घरों का

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझ से मिलने आये हैं
मैं खुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

कुछ चांद चमकते गालों के
कुछ भंवरे काले बालों के
कुछ नाज़ुक शिकनें आंचल की
दो आंखें रोशनदानों की
इक सुर्ख़ दुलाई गोट लगी
क्या जाने कब की चोट लगी
इक छल्ला फीकी रंगत का
इक लाकट दिल की सूरत का
रूमाल कई रेशम से कढ़े
वो ख़त जो कभी मैंने न पढ़े

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझ से मिलने आये हैं
मै खुद न जिन्हे पहचान सकूँ
कुछ इतने धुंदले साये हैं

उजड़ी हुई मांगें शामों की
आवाज़ शिकस्ता जामों की
कुछ टुकड़े ख़ाली बोतल के
कुछ घुंघरू टूटी पायल के
कुछ बिखरे तिनके चिलमन के
कुछ पुर्ज़े अपने दामन के
कुछ तारे ये थर्राये हुए
कुछ गीत कभी के गाये हुए
कुछ शे'र पुरानी ग़ज़लों के
उन्वान[1] अधूरी नज़्मों के
टूटी हुई इक अश्कों की[2] लड़ी
इक खुश्क क़लम, इक बंद घड़ी

---

१. शीर्षक २. आंसुओं की

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझसे मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये हैं

कुछ साथी छूटे - छूटे से
कुछ रिश्ते टूटे - टूटे से
कुछ बिगड़ी-बिगड़ी तस्वीरें
कुछ धुंदली-धुंदली तहरीरें[1]
कुछ आंसू छलके-छलके से
कुछ मोती ढलके-ढलके से
कुछ नक़्श[2] ये हैरां-हैरां से
कुछ अक्स[3] ये लर्ज़ा-लर्ज़ा[4] से
कुछ उजड़ी-उजड़ी दुनियायें
कुछ भटकी - भटकी आशायें
कुछ बिखरे-बिखरे सपने हैं
ये ग़ैर नहीं सब अपने हैं

मत रोको इन्हें पास आने दो
ये मुझ से मिलने आये हैं
मैं ख़ुद न जिन्हें पहचान सकूं
कुछ इतने धुंदले साये है

(१९५८)

० ० ०

१. लिखावटें २. चित्र ३. प्रतिछायायें ४. कम्पित

ग़ज़लें

हाय उनकी उम्र का रंगीं निज़ाम[१] ।
बुतकदे की[२] सुबह, मैख़ाने की शाम ॥

ऐ वो तसलीमे-मोहब्बत की[3] अदा ।
ऐ वो शर्माया हुआ उनका सलाम ॥

हाय वो रातों की दोहरी चाँदनी ।
वो जमाले-दोस्त[४] , वो माहे-तमाम[५] ॥

दो दिलों का वो तसादुम[६] हाय, हाय ।
जैसे मैख़ाने में टकराते हों जाम ॥

दास्ताने - शोख़ - ईमाई[७] न पूछ !
उसने नज़रें फेर लीं क़िस्सा तमाम ॥

◇ ◇ ◇

---

१. व्यवस्था, अवस्था २. मन्दिर की ३. प्रेम को स्वीकार करने की ४. मित्र (प्रेयसी) की सुन्दरता ५. पूर्ण चाँद ६. परस्पर टकराव ७. (प्रेयसी की) चंचलता की कथा

क्या कहिये कि क्या-क्या बादल से बिजली के इशारे होते हैं।
वो बाल बखेरे जब मेरे बाज़ू के सहारे होते हैं॥

जब दिल में उमंगें उठती हैं, जज़्बात शरारे होते हैं।
बेचैन निगाहें रहती हैं, बेताब[1] इशारे होते हैं॥

हां सच है ग़लत कब तुमने कहा, ये दिल तो तुम्हारा हो ही चुका।
तुम हम से ख़फ़ा क्यों होते हो, लो हम भी तुम्हारे होते हैं॥

अब हिज्र की रातें कटती हैं, अब ख़ैर से वो दिन आता है।
अब आप हमारे होते हैं, अब आप हमारे होते हैं॥

ये हुस्न के जलवे आंच न दें, दामन को बचाना, बच जाना।
खेल आग का 'अख़्तर' ठीक नहीं, ये लोग शरारे होते हैं॥

◊ ◆ ◊

१. आतुर

दूर कोई रात भर गाता रहा।
तेरा मिलना मुझ को याद आता रहा॥
इस तरह कुछ उसने छेड़ा दिल का साज़।
देर तक हर तार थर्राता रहा॥
हुस्न पर तासीरे-ग़म[1] होती रही।
इक शगुफ़्ता[2] फूल कुम्हलाता रहा॥
हम भी जब्ते-दर्दो-ग़म[3] करते रहे।
वो भी अपने दिल को समझाता रहा॥
हम न आये फिर चमन में लौट कर।
मौसमे-गुल[4] बार-बार आता रहा॥
अब तो 'अख़्तर' लुत्फ़े-ग़म[5] भी मिट गया।
अब तो वो आराम भी जाता रहा॥

० ० ०

१. ग़म का असर २. खिला हुआ ३. दुख-दर्द को सहन
४. वसन्त-ऋतु ५. ग़म का आनन्द

हाय वो इक रात, साहिल, रागनी, महताब[1], तुम।
बन गये मेरे लिये क्या-क्या सुनहरा ख़्वाब तुम॥
भूलना क्या ख़ुद जुदाई का ज़माना है गवाह।
और भी बेताब हम हैं और भी बेताब तुम॥
मेरी ख़ामोशी पे जब तुम रो दिये हो बारहा[2]।
लाओगे किस दिल से मेरे आंसुओं की ताब[3] तुम॥
तुम जो उट्ठे झिलमिला उट्ठे सितारों के चिराग।
लूट कर क्यों ले चले हुस्ने-शबे-महताब[4] तुम॥
इन वफ़ा की बस्तियों में, इस जुनूं के[5] देस में।
आज भी नायाब[6] हम हैं आज भी नायाब तुम॥
हाय ये वीरान आंखें, ज़र्द चेहरा, ख़ुश्क होंट।
आज भी मेरे लिए हो इक गुले-शादाब[7] तुम॥
उनका दामन छोड़कर जाते तो हो 'अख़्तर' मगर।
ले के आओगे कहां ये दीदा-ए-पुरआब[8] तुम॥

० ० ०

---

१. चांद २. कई बार ३. सहन करने की शक्ति ४. चांदनी-रात की सुन्दरता ५. उन्माद के ६. दुर्लभ ७. खिला हुआ फूल ८. सजल नेत्र

मैकशी अब मेरी आदत के सिवा कुछ भी नहीं।
ये भी इक तल्ख हक़ीक़त के[1] सिवा कुछ भी नहीं॥

फ़ितना-ए-अक़्ल के[2] जोया[3], मेरी दुनिया से गुज़र।
मेरी दुनिया में मोहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं॥

दिल में वो महशरे-जज्बात[4] कहाँ तेरे बग़ैर।
एक खामोश क़यामत के सिवा कुछ भी नहीं॥

मुझ को ख़ुद अपनी जवानी की क़सम है कि ये इश्क़।
इक जवानी की शरारत के सिवा कुछ भी नहीं॥

थी कभी अपनी मोहब्बत भी हक़ीक़त 'अख़्तर'।
आज वो हर्फ़े-हिकायत के[5] सिवा कुछ भी नहीं॥

◇ ◇ ◇

१. कटु वास्तविकता के २. बुद्धि-रूपी उपद्रव के ३. ढूंढने वाले
४. भावनाओं की प्रलय (आधिक्य) ५. कथा-कहानी

साज़ बे-मुतरिब-ओ-मिज़राब[1] नज़र आते हैं।
फिर भी नग़मे हैं कि बेताब नज़र आते हैं॥
वही महफ़िल है, वही रौनक़े-महफ़िल भी है।
कितने बदले हुए आदाब नज़र आते हैं॥
क़ाफ़िला आज ये किस मोड़ पे आ पहुँचा है।
अब क़दम और भी बेताब नज़र आते हैं॥
कल यही ख्वाब हक़ीक़त में बदल जायेंगे।
आज जो ख्वाब फ़क़त ख्वाब नज़र आते हैं॥
मुस्कराते हुए फ़र्दा के[2] उफ़क़ पर[3] 'अख्तर'।
एक क्या सैकड़ों महताब[4] नज़र आते हैं॥

० ० ०

१. गायक और सितार बजाने के छल्ले के बिना २. आने वाले कल के ३. क्षितिज पर ४. चाँद

ख़ामशी बज़्म का[1] दस्तूर[2] हुई जाती है।
फिर से लब[3] खोल कि हंगामा उठे देर हुई ॥
ज़िन्दगी अपने तज़ादों को[4] छुपाती कब तक ?
एक पर्दा सा निगाहों से हटे देर हुई ॥
और दो-चार मराहिल से[5] गुज़रना है तो क्या ?
अपनी मंज़िल की तरफ़ हमको बढ़े देर हुई ॥
ऐ उरूसे-चमने-दहर[6] निगाहें तो उठा ।
आस्मां को तेरे क़दमों पे झुके देर हुई ॥
मुतरिबे-बज़्मे-कुहन[7] हाथ से बरबत[8] रख दे ।
इक नया साज़ फ़ज़ाओं में[9] छिड़े देर हुई ॥
साक़िया ! अब तो नये दौर का वक़्त आ पहुँचा ।
जामे - गुलरंग[10] उठा, रात ढले देर हुई ॥

◇ ◇ ◇

---

१. महफ़िल का २. नियम ३. होंट ४. परस्पर भेदों को ५. मंज़िलों से, रास्तों से ६. संसार-रूपी वाटिका की दुल्हन ७. पुरानी महफिल का गायक ८. बाजा ९. वातावरण में १०. पुष्प-वर्ण शराब का प्याला

क़ितए

ये किस का ढलक गया है आंचल ?
तारों की निगाह झुक गई है।
ये किस की मचल गई हैं जुल्फें ?
जाती हुई रात रुक गई है॥

◇ ◇ ◇

अब उफ़क़[1] जगमगाने वाला है,
चांद अब मुस्कराने वाला है।
फूल बिछने लगे हैं रस्ते में,
कोई वायदे पे आने वाला है॥

◇ ◇ ◇

हुस्न का इत्र, जिस्म का संदल,
आरिज़ों के[2] गुलाब, जुल्फ़ का ऊद[3]।
बाज़ औक़ात[4] सोचता हूं मैं,
एक खुशबू है सिर्फ़ तेरा वुजूद[5]॥

◇ ◇ ◇

यूं उसके हसीन आरिज़ों पर[6],
पलकों के लचक रहे हैं साये।
छिटकी हुई चांदनी में 'अख़्तर',
जैसे कोई आड़ में बुलाये॥

◇ ◇ ◇

१. क्षितिज २. कपोलों के ३. केशों का अगर (सुगन्धि) ४. कभी-कभी ५. शरीर, अस्तित्व ६. कपोलों पर

अंगड़ाई ये किसने ली अदा से ?
कैसी ये किरन फ़ज़ा में[1] फूटी ?
क्यों रंग बरस पड़ा चमन में ?
क्या क़ौसे-क़ज़ह[2] लचक के टूटी ?

◇ ◇ ◇

इक ज़रा रसमसा के सोते में,
किसने रुख़ से[3] उलट दिया आंचल ?
हुस्न कजला गया सितारों का,
बुझ गई माहताब की[4] मशअ़ल ।।

◇ ◇ ◇

इक नई नज़्म कह रहा हूं मैं,
अपने जज़्बात की हसीं तफ़सीर[5] ।
किस मोहब्बत से तक रही है मुझे,
दूर रक्खी हुई तेरी तस्वीर ।।

◇ ◇ ◇

आज मुद्दत के बाद होंटों पर,
एक मुबहम-सा[6] गीत आया है ।
इसको नग़्मा तो कह नहीं सकता,
ये तो नग़्मे का एक साया है ।।

◇ ◇ ◇

---

१. वातावरण में २. इन्द्रधनुष ३. मुखड़े से ४. चांद की
५. व्याख्या ६. अस्पष्ट-सा

क़ितए

ये किस का ढलक गया है आंचल ?
तारों की निगाह झुक गई है।
ये किस की मचल गई हैं जुल्फें ?
जाती हुई रात रुक गई है॥

◇ ◇ ◇

अब उफ़क़[1] जगमगाने वाला है,
चांद अब मुस्कराने वाला है।
फूल बिछने लगे हैं रस्ते में,
कोई वायदे पे आने वाला है॥

◇ ◇ ◇

हुस्न का इत्र, जिस्म का संदल,
आरिज़ों के[2] गुलाब, जुल्फ़ का ऊद[3]।
बाज औक़ात[4] सोचता हूं मैं,
एक खुशबू है सिर्फ़ तेरा वुजूद[5]॥

◇ ◇ ◇

यूं उसके हसीन आरिज़ों पर[6],
पलकों के लचक रहे है साये।
छिटकी हुई चांदनी में 'अख़्तर',
जैसे कोई आड़ में बुलाये॥

◇ ◇ ◇

---

१. क्षितिज २. कपोलों के ३. केशों का अगर (सुगन्धि) ४. कभी ५. शरीर, अस्तित्व ६. कपोलों पर

अंगड़ाई ये किसने ली अदा से ?
कैसी ये किरन फ़ज़ा में[1] फूटी ?
क्यों रंग बरस पड़ा चमन में ?
क्या क़ौसे-क़ज़ह[2] लचक के टूटी ?

◇ ◇ ◇

इक ज़रा रसमसा के सोते में,
किसने रुख़ से[3] उलट दिया आंचल ?
हुस्न कजला गया सितारों का,
बुझ गई माहताब की[4] मशअ़ल ।।

◇ ◇ ◇

इक नई नज़्म कह रहा हूं मैं,
अपने जज़्बात की हसीं तफ़सीर[5] ।
किस मोहब्बत से तक रही है मुझे,
दूर रक्खी हुई तेरी तस्वीर ।।

◇ ◇ ◇

आज मुद्दत के बाद होंटों पर,
एक मुबहम-सा[6] गीत आया है ।
इसको नग़मा तो कह नहीं सकता,
ये तो नग़मे का एक साया है ।।

◇ ◇ ◇

---

१. वातावरण मे २. इन्द्रधनुष ३. मुखड़े से ४. चांद की
५. व्याख्या ६. अस्पष्ट-सा

चन्द लम्हे को[1] तेरे आने से,
तपिशे-दिल ने[2] क्या सुकूं[3] पाया।
धूप में गर्म कोहसारों की[4],
अब्र का[5] जैसे दौड़ता साया॥

◇ ◇ ◇

अब्र में छुप गया है आधा चांद,
चाँदनी छन रही है शाखों से।
जैसे खिड़की का एक पट खोले,
झांकता हो कोई सलाखों से॥

◇ ◇ ◇

यूं दिल की फ़जा मे[6] खेलते हैं,
रह-रह के उम्मीद के उजाले।
छुप-छुप के कोई शरीर[7] लड़की,
आईने का अक्स[8] जैसे डाले॥

◇ ◇ ◇

अपनी तस्कीन के[9] लिए ऐ दोस्त,
तेरे ग़म से निबाहता हूँ मैं।
कैसे कह दूं कि चाहता हूं तुझे?
ये तो अपने को चाहता हूँ मै॥

◇ ◇ ◇

---

१. कुछ क्षणों के लिए २. दिल के ताप ने ३. शान्ति ४. पर्वत माला की ५. बादल का ६. वातावरण में ७. चंचल ८. प्रतिछाया ९. सन्तुष्टि के

तितली कोई बेतरह भटक कर,
फिर फूल की सिम्त[1] उड़ रही है।
हिर-फिर के मगर तेरी ही जानिब[2],
इस दिल की निगाह मुड़ रही है॥

◇ ◇ ◇

किसको मालूम था कि अहदे-वफ़ा[3],
इस क़दर जल्द टूट जायेगा।
क्या ख़बर थी कि हाथ लगते ही,
फूल का रंग छूट जायेगा।

◇ ◇ ◇

आज किसने किया है अज़्मे-सफ़र[4] ?
कौन मुझ से चला है कोसों दूर।
क्यों ये महसूस हो रहा है मुझे ?
जैसे मैं थक के हो गया हूँ चूर।

◇ ◇ ◇

ये मुजस्सम शिकस्तगी[5] मेरी रूह,
और बाक़ी है कुछ नफ़स का खेल।
उफ़ मेरे गिर्द ये तेरी बाँहें,
टूटती शाख़ पे लिपटती बेल।

◇ ◇ ◇

१, २. ओर ३. प्रेम-प्रतिज्ञा ४. सफ़र का संकल्प ५. साकार-भंजन

चन्द लम्हे को[१] तेरे आने से,
तपिशे-दिल ने[२] क्या सुकूं[३] पाया।
धूप में गर्म कोहसारों की[४],
अब्र का[५] जैसे दौड़ता साया॥

◇ ◇ ◇

अब्र में छुप गया है आधा चांद,
चांदनी छन रही है शाखों से।
जैसे खिड़की का एक पट खोले,
झांकता हो कोई सलाखों से॥

◇ ◇ ◇

यूं दिल की फ़ज़ा में[६] खेलते हैं,
रह-रह के उम्मीद के उजाले।
छुप-छुप के कोई शरीर[७] लड़की,
आईने का अक्स[८] जैसे डाले॥

◇ ◇ ◇

अपनी तस्कीन के[९] लिए ऐ दोस्त,
तेरे ग़म से निबाहता हूँ मैं।
कैसे कह दूं कि चाहता हूं तुझे?
ये तो अपने को चाहता हूँ मैं॥

◇ ◇ ◇

---

१. कुछ क्षणों के लिए २. दिल के ताप ने ३. शान्ति ४. पर्वत मालाओं की ५. बादल का ६. वातावरण में ७. चंचल ८. प्रतिछाया ९. सन्तुष्टि के

यूंही बदला हुआ सा इक अंदाज़,
यूंही रूठी हुई सी एक नज़र।
उम्र भर मैंने तुझ पे नाज़ किया,
तू किसी दिन तो नाज़ कर मुझ पर ?

◇ ◇ ◇

कितनी मासूम हैं तेरी आँखें ?
बैठ जा मेरे रूबरू[1] मेरे पास।
एक लम्हे को भूल जाने दे,
अपने इक इक गुनाह का एहसास[2] ॥

◇ ◇ ◇

आ, कि उन बदगुमानियों की[3] कसम,
भूल जायें गलत-सलत बातें।
आ किसी दिन के इन्तज़ार में ऐ दोस्त,
काट दें जाग-जाग कर रातें ॥

◇ ◇ ◇

कर चुकी है मेरी मोहब्बत क्या,
तेरी बेएतिनाइयों को[4] मुआफ़ !
अक़्ल ने पूछना बहुत चाहा,
कह सका दिल न कुछ भी तेरे ख़िलाफ़॥

◇ ◇ ◇

---

१. सम्मुख २. अनुभूति ३. मिथ्या सन्देहों की ४. उपेक्षाओं को

रुबाइयां

शबनम से[1] अभी रात को धुलने दे ज़रा,
आंखों में खुमारे-शब[2] तो घुलने दे ज़रा,
जायेगी कहां रात बचाकर दामन,
साक़ी की अभी जुल्फ़ तो खुलने दे ज़रा।

◇ ◇ ◇

हर रात जगा देती है जादू अब तक,
खुल जाते है महके हुए गेसू[3] अब तक,
किस नाज़ से शाने पे[4] मेरे सर रखकर,
सोती है तेरी जुल्फ़ की खुशबू अब तक।

◇ ◇ ◇

आंखें जो मिलीं कुछ तेरे काजल ने कहा,
उड़ते हुए कुछ जुल्फ़ के बादल ने कहा,
वो राज़ जो कह सका न खुल कर कोई,
वो तेरे लिपटते हुए आंचल ने कहा।

◇ ◇ ◇

बिखरे जो हसीं जुल्फ़ बिखर जाने दे,
इस वक़्त को कुछ और संवर जाने दे,
बाक़ी न रहे सुबह का धड़का कोई,
इक रात तो ऐसी भी गुज़र जाने दे।

◇ ◇ ◇

---

१. ओस से २. रात का मदिरालस ३. केश ४. कंधों पर

वो देख वो आरिज़ के[१] जवां फूल खिले,
पलकों के वो लहराये फ़ज़ा में[२] साये,
वो जाम[३] लिये मस्त निगाहें उट्ठीं,
उड़ते हुए वो जुल्फ़ के[४] बादल आये।

◇ ◇ ◇

ये नींद से होती हुई बोझल पलकें,
लौ तेज सितारों की कहो कम कर दूं,
चुभती हों जो आंखों में लपकती किरनें,
मै चांद का ये चिराग़ मद्धम कर दूं।

◇ ◇ ◇

शबनम से[५] कहो गुलों पे[६] नर्मी से गिरे,
मस्ताना शमीम[७] सांस रोके हुए आये,
गाये न लहक के उसके गुर्फ़े में[८] सबा[९],
कच्ची है अभी नींद कहीं जाग न जाये।

◇ ◇ ◇

अब इश्क़ो-मोहब्बत के वो नग़मे न रहे,
सीने में है आज दिल की धड़कन ख़ाली,
जिस तरह चहककर कोई तायर[१०] उड़ जाये,
और जैसे लचकती रहे सूनी डाली।

◇ ◇ ◇

---

१. कपोलों के २. वातावरण में ३. शराब का प्याला ४. केशों के ५. ओस से ६. फूलों पर ७. सुगंध ८. खिड़की या दरीचे मे ९. प्रभात समीर १०. पक्षी

बरखा है कि इक नार सलोनी चंचल,
पलकों से बखेरती लुटाती काजल,
मचली हुई ज़ुल्फ़ों में नदी की लहरें,
भीगे हुए पल्लू में लिये नील कंवल।

◇ ◇ ◇

गाती हुई मालकौस इक-सुर बाला,
होती हुई पचरंग गले की माला,
आंखों में वो जागी हुई आवाज की जोत,
चेहरे पे वो पड़ता हुआ लय का हाला[१]।

◇ ◇ ◇

रह रह के हवा दिल की बदल जाती है,
सोहबत[२] कभी फूलों की भी खल जाती है,
लेकिन कभी इक सांस जो लेती है कली,
सीने की हर इक फांस निकल जाती है।

◇ ◇ ◇

जीवन की ये छाई हुई अंधियारी रात,
क्या जानिये किस मोड़ पे छूटा तेरा सात[३],
फिरता हूं डगर-डगर अकेला लेकिन,
शाने पे[४] मेरे आज तलक[५] है तेरा हात[६]।

◇ ◇ ◇

---

१. मंडल २. संगत ३. साथ ४. कंधे पर ५. तक ६. हाथ

वो देख वो आ़रिज़ के[१] जवां फूल खिले,
पलकों के वो लहराये फ़ज़ा में[२] साये,
वो जाम[३] लिये मस्त निगाहें उट्ठीं,
उड़ते हुए वो ज़ुल्फ़ के[४] बादल आये।

◇ ◇ ◇

ये नींद से होती हुई बोझल पलकें,
लौ तेज़ सितारों की कहो कम कर दू,
चुभती हों जो आंखों में लपकती किरनें,
मैं चाँद का ये चिराग़ मद्धम कर दूं।

◇ ◇ ◇

शबनम से[५] कहो गुलों पे[६] नर्मी से गिरे,
मस्ताना शमीम[७] सांस रोके हुए आये,
गाये न लहक के उसके ग़ुर्फ़े में[८] सबा[९],
कच्ची है अभी नींद कहीं जाग न जाये।

◇ ◇ ◇

अब इश्क़ो-मोहब्बत के वो नग़मे न रहे,
सीने में है आज दिल की धड़कन खाली,
जिस तरह चहककर कोई तायर[१०] उड़ जाये,
और जैसे लचकती रहे सूनी डाली।

◇ ◇ ◇

---

१. कपोलो के २. वातावरण में ३. शराब का प्याला ४. केशों के ५. ओस से ६. फूलों पर ७. सुगंध ८. खिड़की या दरीचे में ९. प्रभात समीर १०. पक्षी

वरखा है कि इक नार सलोनी चंचल,
पलकों से वखेरती लुटाती काजल,
मचली हुई जुल्फ़ों में नदी की लहरें,
भीगे हुए पल्लू[1] में लिये नील कंवल।

◇ ◇ ◇

गाती हुई मालकौस इक-सुर वाला
होती हुई पचरंग गले की माला
आंखों में वो जागी हुई आवाज़ की जोत
चेहरे पे वो पड़ता हुआ लय का हाला[1]

◇ ◇ ◇

रह रह के हवा दिल की व[illegible] [illegible]
सोहवत[2] कभी फूलों की भी [illegible]
लेकिन कभी इक सांस जो [illegible]
सीने की हर इक फांस निक[illegible]

◇ ◇

जीवन की ये छाई हुई अंधि[illegible]
क्या जानिये किस मोड़ पे छूटा ते[illegible]
फिरता हूं डगर-डगर अकेला[3]
शाने पे[4] मेरे आज तलक[5] है ते[illegible]

◇ ◇

१. मंडल २. संगत ३. साथ ४. कंधे पर ५

तेरा ख़ुलूस[१], तेरी मोहब्बत, तेरी वफ़ा।
ये भी मेरा फरेबे-तमन्ना[२] न हो कहीं॥

◇ ◇ ◇

मै ठिठक के रह गया हूं कि किधर क़दम उठाऊँ।
मेरे दिल में तूने छुपकर मुझे इस तरह पुकारा॥
कोई मौजे-ग़म[३] ही बनकर मेरी रूह में समाजा।
किसी सिम्त[४] मुड़ तो जाये मेरी जिन्दगी का धारा॥

◇ ◇ ◇

जिन्दगी क्या है मुसलसल शौक़[५], पैहम इज़्तराब[६]।
हर क़दम पहले क़दम से तेज़तर रखता हूं मैं॥

◇ ◇ ◇

एक हल्का-सा तबस्सुम[७], एक गहरा-सा ख़ुमार।
हाय वो आंखें कि तारे देखते हों कोई ख़्वाब॥

◇ ◇ ◇

ये गुल[८] भी ज़ख़्म, ये शबनम भी आंसू।
मुझे धोका न दे फ़स्ले-बहारां[९]॥

◇ ◇ ◇

इश्क़ का राज़ ज़माने से कहूं या न कहूं।
इस अंधेरे में कोई शम्मअ् जलाऊँ कि नहीं?

◇ ◇ ◇

---

१. स्नेह, शुद्ध-हृदयता २. अभिलाषा का धोखा ३. ग़म की लहर ४. ओर ५. निरंतर उत्कंठा ६. निरंतर व्याकुलता ७. मुस्कान ८. फूल ९. वसन्त ऋतु

मौजे - तूफ़ां[1] मुझे सीने से लगाये रखना।
तेरे आग़ोश की[2] लज्ज़त[3] तो किनारों में नहीं ॥

◇ ◇ ◇

क़ुव्वते - तामीर[4] थी ऐसी ख़सो-ख़ाशाक में[5]।
आंधियां चलती रहीं और आशियां[6] बनता गया ॥

◇ ◇ ◇

तूने देखा भी नहीं और दिल धड़कने भी लगा।
जैसे बिन छेड़े हुए बजने लगे कोई रबाब[7] ॥

◇ ◇ ◇

वो ग़म हो या मसर्रत हो, वो मरना हो कि जीना हो।
मुझे हर हाल में अपनी ज़रूरत बख़्श दी तू ने ॥

◇ ◇ ◇

तू यक़ीं[8] जान कि अक्सर तो सुकूते-शब में[9]।
मैंने महसूस किया है मेरी आवाज़ है तू ॥

◇ ◇ ◇

कभी ख़ुद अपनी वफ़ा से हुआ है दिल बेज़ार,
कभी ख़ुद उनकी मोहब्बत भी बार गुज़री है।

◇ ◇ ◇

और दो चार मराहिल से[10] गुज़रना है तो क्या ?
अपनी मंज़िल की तरफ़ हमको बढ़े देर हुई ॥

◇ ◇ ◇

---

१. तूफ़ान की लहर २. गोद की ३. आनन्द ४. निर्माण-शक्ति
५. घास-फूस में ६. घोंसला, घर ७. बीणा ८. यक़ीन, विश्वास
९. रात की चुप्पी में १०. (कठिन) रास्तों से